पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में पात्रों का मनोविज्ञान
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में साम्प्रदायिक उन्माद से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में राजनीति से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों को स्थापित करते पात्र

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण :-

साहित्य में किसी भी कहानी, नाटक अथवा उपन्यास के 'पात्र' प्राणरूप होते हैं । लेखक इन पात्रों के माध्यम से ही अपने विचार व्यक्त करने में समर्थ होता है । पात्र किसी भी विधा की एक ऐसी शक्ति है जिसके बिना लेखक की विधा नीरस प्रतीत होगी । तथापि लेखक अपनी भावनाओं, अपने विचारों तथा अपनी गतिविधियों के परिणाम हेतु पात्रों को माध्यम बनाता है । आचार्य प्रवर पं० रामचन्द्र शुक्ल ने चरित्र चित्रण का महत्व निरूपण करते हुए उसे 'काव्य की उच्च भूमि' का अभिदान प्रदान किया था, क्योंकि उसके माध्यम से भावों का जीवन व्यापी स्वरूप प्राप्त हो जाता है । उन्होंने लिखा है - "जीवन की सार्थकता को निरुपित करने में सबसे आगे होने के कारण उपन्यासों के पात्र मानव-चरित्र एवं उसके कार्य व्यापारों का अधिकाधिक व्यापक, स्पष्ट स्वाभाविक एवं कलात्मक स्वरूप प्रस्तुत करने में अपना प्रतिद्वन्दी नही रखते ।"0।

उसी प्रकार उपन्यास के पात्रों की सजीवता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० प्रताप नारायण टंडन ने लिखा ह कि, "यदि किसी कृति के पात्रों में सजीवता अथवा सशक्तता के गुण विद्यमान होते हैं, तो वह पाठक के हदय पर भारी प्रभाव डालते हैं । "02

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में पात्रों का मनोविज्ञान :-

साइकोलोजी

(psychology) शब्द की व्युत्पत्ति देखें तो यह दो ग्रीक शब्दों साइकी-सोल (Psyche-Soul) और (Logos-Discourse) से बना है । इस परिभाषा के मार्ग में दो कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई हैं । प्रथम - यह व्यक्ति विशेष की चिन्तन क्रिया होने से सभी को एक जैसी प्रतीत नहीं होती । दूसरी - उन वैयक्तिक प्रक्रियाओं को केवल वही व्यक्ति अनुभव करता था जो विचारक व वर्णनकर्त्ता होता था । इन सीमाओं के कारण मनोविज्ञान धीरे-धीरे मन की अनुभूतियों (फीलिंग) को छोड़कर प्रत्यक्ष मनुष्य व्यवहार के अध्ययन पर बल दने लगा 03

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ह । अतः समाज में रहते हुए उसे अनेक कठिनाइयों तथा विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है । किसी भी मनुष्य का जीवन सीधा-सादा व्यतीत हो ऐसा ज़रूरी नहीं । प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ न कुछ उथल-पुथल होती रहती है । इस उथल-पुथल के अनेक रूप हैं जैसे - सामाजिक रूप, पारिवारिक रूप, धार्मिक रूप, आर्थिक रूप, तथा व्यक्तिगत रूप । जब व्यक्ति समाज, परिवार अथवा अपने किसी प्रिय जन द्वारा धुत्कार या नकार दिया जाता है अथवा किसी कारण समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है तो उसका स्वभाव या तो विद्रोही हो जाता है अथवा तो मानसिक रूप से पीड़ित । ऐसा व्यक्ति जब अपने लिये नहीं लड़ पाता तो उसका जीवन कुंठाग्रस्त हो जाता है । ऐसा ही एक पात्र राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'टोपी शुक्ला' का बलभद्रनारायण उर्फ टोपी शुक्ला है ।

'टोपी शुक्ला' उपन्यास का पात्र टोपी शुक्ला केन्द्र बिन्दु है जो कहानी में शुरु से लेकर अन्त तक बना रहता है । टोपी शुक्ला ने अपने जीवन में अभाव के अतिरिक्त कुछ नहीं देखा । उसके जीवन में अभाव ही अभाव है जिसके कारण वह कुंठाग्रस्त हो जाता है । सर्वप्रथम वह स्वयं को परिवार से अलग अनुभव करता है । बाल्यकाल में ही टोपी की दादी उसको कहानी न सुनाकर उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कहानियाँ सुनाती । क्योंकि टोपी दिखने में बहुत ही काला और भद्दा है । टोपी जब पैदा हुआ था तब उसके शरीर पर बहुत बाल थे । "टोपी शुक्ला की सूरत खराब थी । परन्तु थे बड़े शर्मीले । नंगे पैदा नहीं हुए । सिर के बाल सारे बदन पर उगाकर पैदा हुए । नतीजा यह हुआ कि सुबह को जब

चमाइन आई और रामदुलारी को मल-मलाकर अपने घर गई तो उसने अपने पति से कहा : "दागदर साहब के घर बनमानुस भइल बाय ।"04 टोपी शुक्ला के घर में सभी हैरान-परेशान कि टोपी की शक्ल किस पर चली गई है पूरा खानदान छान मारा पर कोई नहीं मिला जो उसके जैसा दिखता हो ।

घर में उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू के लिये ही सब कुछ किया जाता । हर चीज़ पर पहले मुन्नी बाबू का अधिकार होता । जब मुन्नी बाबू के कपड़े बनते तो उसकी उतरन टोपी को दी जाती । यहाँ तक कि उसकी दादी तो टोपी को अपने पास भी नहीं भटकने देतीं कि कहीं टोपी ने उन्हें छू लिया तो वह मैली न हो जाये । दादी मुन्नी बाबू को गोद में लिटाकर कहानी सुनातीं । टोपी अपना दिल मसोस कर रह जाता । "मुन्नी बाबू अलबत्ता जब देखो तब दादी की गोद में अँड़से हुए हैं । कभी दादी उन्हें "गुलिस्ताँ" की कहानियाँ सुना रही हैं, कभी "तिलस्मे-होशरुबा" की सैर करा रही हैं । कभी "रामायण" सुना रही हैं और कभी "महाभारत" के वीरों की कथाएँ याद करवा रही हैं ।"05

जब भी टोपी किसी भी वस्तु के लिये ज़िद करता तो डाँट दिया जाता । टोपी अपने जीवन में अकेलापन अनुभव करने लगा । "नतीजा यह हुआ कि टोपी को शेख़ सादो, अमीर हमज़ा की कथा, रामायण, महाभारत-और बड़ों से नफ़रत हो गई । वह इस सबको मुन्नी बाबू की पार्टी का समझने लगा । टोपी शुक्ला को बाल्यकाल से ही परिवार में तिरस्कृत किया गया । परिवार में उसके प्रति तिरस्कार की भावना के कारण उसमें घृणा का मनोविकार उत्पन्न होने लगा । अतः वह अपने परिवार, समाज यहाँ तक कि ईश्वर से भी नफ़रत करने लगा । इसीलिए वह अपनी दादी को चिढ़ाने के लिए भगवान का मज़ाक उड़ाता है । दादी से बोला : "दादी जी, आप उस काले-कलूटे कृष्न को पूजती हैं ना, तो एक-न-एक दिन आपकी पूजा जरूर काली हो जायेगी ।"06

इस बात पर उसकी माँ रामदुलारी ने उसे इतना पीटा कि वह घर छोड़कर भाग जाता है । टोपी अपने परिवार के वातावरण के कारण जनसंघी बन जाता है । जिस दिन वह घर छोड़कर जाता है उसी दिन उसकी मुलाक़ात इफ्फ़न से होती है । जो टोपी का अच्छा दोस्त बन जाता है । इफ्फ़न मुस्लिम है इसलिए वह उसके घर का खाना खाने से

भी इन्कार कर देता है क्योंकि उसके परिवार में उसे ऐसे ही संस्कार दिये गये थे । "हम मियाँ लोगन का छुआ ना खाते । मियाँ लोग बहुत बुरे होवे हैं ।"07

उपेक्षित टोपी इफ्फ़न का दोस्त बन जाता है । उसके घर आने-जाने लगा । उसे इफ्फ़न की दादी अच्छी लगने लगीं । वह मन में यही सोचता कि इफ्फ़न की दादी मेरी दादी क्यों नहीं है ? इसीलिए वह एक दिन इफ्फ़न से कहता है - "अय्यसा ना हो सकता का की हम लोग दादी बदल लें ।"08 टोपी के इस सीधे-सादे सवाल में कितना दर्द दिखाई देता है । घर में मुन्नी बाबू टोपी पर कोई न कोई आरोप लगाते रहते जिससे टोपी को मार पड़ती । एक दिन मुन्नी बाबू ने बोल दिया कि "हम एक दिन एको रहीम कबाबची की दुकान पर कबाबो खाते देखा रहा ।"09 इन सब घटनाओं से टोपी का स्वभाव निरंतर विद्रोही एवं उग्र होता जा रहा था ।

जब भी परीक्षा का समय आता तो टोपी को इतना काम दिया जाता कि वह पढ़ ही नहीं पाता नतीजा टोपी हर बार फेल हो जाता । और फिर घर वाले उसकी नाक़दरी करने लगते । यहाँ तक कि स्कूल में भी अध्यापकों द्वारा लज्जित किया जाता । मास्टर के सवाल पूछने पर जब भी वह हाथ उठाता तो उसको उपेक्षित किया जाता । एक दिन तो मास्टर साहब ने बोल ही दिया । "तीन बरस से यही किताब पढ़ रहे हो, तुम्हें सारे जवाब ज़बानी याद हो गये होंगे ! इन लड़कों को अगले साल हाईस्कूल का इम्तिहान देना है । तुमसे पारसाल पूछ लेंगे ।"10

बचपन से ही टोपी में कमतर की भावना विकसित होने लगी । टोपी जिस क्षेत्र में भी गया उसे उपेक्षित ही किया गया । जब वह उच्च परीक्षा के लिए अलीगढ़ युनिवर्सिटी जाता है तब वहाँ वह स्कालरशिप का उम्मीदवार होता है किन्तु मुस्लिम युनिवर्सिटी होने के कारण वह स्कालरशिप टोपी को न मिलकर किसी मुस्लिम लड़के को मिल जाती है । जब टोपी अलीगढ़ आता है तब जनसंघी होता है । बाद में मुस्लिम लीगी बन जाता है । इसलिए उसको हिन्दू लड़के मौलाना टोपी बुलाने लगे । टोपी एम० ए० करके भी बेरोज़गार था । कहीं उसे हिन्दू कॉलेज होने के कारण नौकरी नहीं मिलती और कहीं मुस्लिम कॉलेज में

उसके नाम के कारण नौकरी नहीं मिलती । टोपी का दोस्त इफ्फ़न उसे एक नौकरी बताता है ।

"एपलाई कर दो ।"

"कॉलेज हिन्दुओं का है, मुझे नौकरी नहीं मिलेगी ।"

"तो इसलामिया कॉलेज में अपलाई करो ।"

"मेरा नाम बलभद्रनारायण शुक्ला है ।"11

टोपी शुक्ला एक ऐसा पात्र है जिसने जहाँ से भी कोई आशा की वहाँ से निराशा ही प्राप्त हुई । यह निराशा ही व्यक्ति को कुण्ठित कर देती है । टोपी को जीवन में हार के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला । वह इफ्फ़न की पत्नी सकीना से राखी बँधवाना चाहता है किन्तु वह हिन्दुओं से नफ़रत करती है इसलिए वह भी राखी बाँधने से इंकार देती है । "आज राखी का त्योहार है । तुम मुझे राखी क्यों नहीं बाँध देतीं ?"

"मैं हिन्दुओं को राखी नहीं बाँधती ।"12

टोपी का नाम सकीना के साथ जोड़ा जाने लगा । राह चलते उसके सीनियर सकीना का नाम लेकर उसे छेड़ा करते । "कभी हमें भी मिलवाओ अपनी सकीना से । "13 टोपी जैसे ज़मीन में गड़ गया । अन्दर ही अन्दर घुटने लगा । ऐसे घृणा के वातावरण में उसे अपने व्यक्तित्व के टुकड़े-टुकड़े होते दिखाई दे रहे थे । यहाँ तक कि यह बात उसके घर तक पहुँच जाती है । जब वह घर आता है तो उसके पिता उससे सवाल करते हैं ।

"सकीना कौन है ?"

"वह मेरी कीप नहीं है ।"

"तो कौन है ?"

"मेरे बचपन के एक दोस्त की वाइफ़ है ।"14

इन सब कारणों से टोपी के पिता उसकी शादी एक बदसूरत लड़की जिसके लिये कब से वर नहीं मिल रहा था, तय कर देते हैं । टोपी के इस शादी से इंकार करने पर उसके पिता उसे घर से निकाल देते हैं । "परन्तु मैं ऐसे घर में रहना भी नहीं चाहता जिसने कभी मेरी बात न पूछी हो और जिसमें मुझ पर अपनी बहन के साथ फँस जाने का आरोप

लगाया हो ।"15 टोपी का दिल एक बार फिर चूर-चूर हो गया । वह अपनी इच्छाओं को अन्दर दबा कर धँसता ही जा रहा था ।

टोपी को घर से निकाल देना उसके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है । इस घटना के बाद वह इफ्फ़न को ख़त लिखता है - "आज मुझे पता चला कि तुम्हारे बाबा आदम जन्नत से निकाल दिए जाने पर कितने खुश हुए होंगे । जन्नत भी मेरे पिता के घर की तरह बड़ी बोरिंग रही होगी । अमें भाई यह भी कोई बात हुई कि मैं तुम्हारी पत्नी से फँसना चाहूँ तो पिता जी से इज़ाज़त माँगूं । अब तो मेरा घर भी नहीं रह गया है । एक नौकरी, एक घर और एक घरवाली का बन्दोबस्त करो तुरन्त ।"16 इस पत्र के शब्दों में टोपी का कितना दर्द छिपा है जिसे स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है ।

टोपी ने जिसको भी अपने जीवन का भाग बनाना चाहा वह उससे दूर ही होता गया । जीवन में पहली बार उसे किसी लड़की से प्यार हुआ । वह लड़की मुसलमान थी सलीमा । सलामा अपने स्वार्थ के लिए टोपी से प्रेम करती है । उससे अपनी थीसिस लिखवाती है । थीसिस पूरी हो जाने के बाद वह डॉ० वाहिद अंजुम से शादी कर लेती है । और टोपी फिर से वहीं का वहीं रह जाता है ।

टोपी के व्यक्तित्व के बाल्यकाल से ही टुकड़े होना शुरु हो गए थे । प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष जैसे उसके जीवन का एक हिस्सा बन गया । उसके जीवन में एक के बाद एक समस्या आती गयी । जहाँ समस्या होती है । वहीं संघर्ष एवं विद्रोह होता है । टोपी की कभी कोई इच्छा पूरी नहीं हुई । टोपी के जीवन में हर मोड़ पर परिवर्तन परिलक्षित होते हैं । जब उसने चाहा कि उसकी दादी उसे गोद में लिटाकर कहानी सुनाएं तो उसकी जगह मुन्नी बाबू ने ले ली । वह चाहता था कि घर में उसकी माँ के यहाँ साइकिल हो जाए तो भैरव पैदा हो जाता । सकीना से राखी बँधवाकर उसको बहन बनाना चाहता था तो वो भी उसे छोड़ जम्मू चली गई । सलीमा से प्रेम करता था । उससे शादी करना चाहता था । पर वह भी स्वार्थी निकलती है और डॉ० वाहिद अंजुम से शादी कर लेती है । नौकरी चाही तो वह भी नहीं मिली कहीं हिन्दू होने कारण तो कहीं मुसलमान होने के कारण । टोपी का पूरा जीवन समस्याओं से परिपूर्ण रहा ।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो टोपो को पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत आदि रूप से उपेक्षित किया गया जिसके कारण उसका स्वभाव विद्रोही होता गया । "प्रेम सम्बन्धी अतृप्त कठाएँ, असंतोष और व्यर्थता-बोध व्यक्ति को निराशावाद में डाल देता है । इसके फलस्वरूप आत्महत्या की प्रेरणा होती है ।"17 इसके अतिरिक्त बाल्यकाल में ही यदि कोई ग्रन्थि घर कर जाती है तो वह मनुष्य के लिए आजीवन प्रत्येक क्षेत्र में बाधक होती है । टोपी की भी ग्रन्थि बन गई थी कि उसका कोई नहीं है । टोपी अपने एकांकी जीवन से हार मान लेता है वह कम्प्रोमाइज़ नहीं कर पाता । और आत्महत्या कर लेता है ।

टोपी ने अपने जीवन में केवल हार का ही सामना किया और अन्त में वह अपने जीवन से भी हार मान लेता है शायद उसके सामने कोई और रास्ता नहीं था । एकान्तता एवं समाजिक उपेक्षा मनुष्य की आत्महत्या के मानसिक कारण हैं । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जब आन्तरिक द्वन्द्व शक्तिहीन हो जाता है तब मनुष्य का आत्मबल दुर्बल होने लगता है । तथापि वह कोई भी निर्णय लेने में असफल होता है । "मानव जीवन कई बार ऐसे मोड़ पर आ जाता है कि उसे निश्चय करना कठिन हो जाता है कि वह यह करे या वह । उनके मन में द्वन्द्व उठता है जिससे किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह सही निर्णय नहीं कर पाता । आत्मबल और इच्छा शक्ति के अभाव में वह निर्णय नहीं कर पाता कि कौन-सा मार्ग अपनाए या क्या करे । इस असमंजस में ग़लत धारणाएं बनती और बिगड़ती रहती हैं । अनिर्णीतावस्था में वह अन्दर ही अन्दर घुलता रहता है ।"18

इस उपन्यास की दूसरी पात्र सकीना है । हिन्दू-मुस्लिम दंगों में सकीना के पिता सय्यद आबिद रज़ा की हत्या हो जाती है । जिसके कारण वह सम्पूर्ण हिन्दू जाति से घृणा करती है । जीवन में यदि कोई अप्रत्याशित घटना घटित हो जाए तो इस घटना से व्यक्ति के मन में एक ग्रन्थि की उपज हो जाती है जो जीवन भर पीछा नहीं छोड़ती । अपने पिता की हत्या की घटना से सकीना में हिन्दुओं के प्रति यह ग्रन्थि बन गई है कि हिन्दू बहुत बुरे होते हैं तथा वह केवल घृणा के योग्य ही हैं । सय्यद आबिद रज़ा कांग्रेसी थे । सन पैंतालीस में आबिद रज़ा कांग्रेस की टिकट पर खड़े हुए । पाकिस्तान के विरोधी थे । मुस्लिम लीग के

खिलाफ वह अलीगढ़ के नौजवानों को समझाते हैं कि मुस्लिम लीग एक धोखा है । "हिन्दू कुत्ता हाय हाय" मजमें ने जवाब दिया ।"19

सकीना ने अपने बाप और अपने दो भाइयों की लाशें देखी थीं । वह रमेश भइया को राखी बाँधती थी इस घटना के बाद उसने रमेश को राखी बाँधना छोड़ दिया । "दूसरे साल उसने महेश को राखी नहीं बाँधी । उसने राखी खरीदी । परन्तु राखी से एक ईरानी टोपी झाँकने लगी राखी को नालि में फेंककर वह अपने उस भाई को ख़त लिखने बैठ गई जो दिल्ली ही से पाकिस्तान चला गया था ।"20

हिन्दुओं के प्रति उसकी घृणा पराकष्ठा पर तब पहुँचती है जब वह टोपी को राखी बाँधने से मना कर देती है । जब टोपी उसे राखी बाँधने को कहता है "आज राखी का त्यौहार है तुम मुझे राखी क्यों नहीं बाँध देतीं ?"

"मैं हिन्दुओं को राखी नहीं बाँधती ।"21

जब सकीना और टोपी को लेकर युनिवर्सिटी में बदनाम किया जाता है तो भी वह परेशान नहीं होती और टोपी को जवाब देती है । "क्या इसलिए राखी बाँध दूँ कि यहाँ के कलजिब्भे मुझे तुम्हारे साथ बदनाम कर रहे हैं ? मैं हर साल एक राखी खरीदकर नाली में फेंक दती हूँ ।"

"और यह भूल जाती हो कि रमेश ने तुम्हारी हिफ़ाज़त की । और रमेश सफ़र करके राखी बँधवाने आता रहा ।"

"हाँ । मगर मैं यह नहीं भूल सकती कि अब्बा की ईरानी टोपी नाली में फिंक गई थी ।" 22

सकीना की घृणा सम्पूर्ण हिन्दू समुदाय से है । वह अपने पिता की मौत को भूल नहीं पाती है जिसके कारण वह केवल हिन्दुओं से ही नहीं वरन पूरे मुल्क से नफरत करती है । "मैं रमेश भय्या को राखी क्यों बाँधू ? क्या करूँ इफ्फ़न पाकिस्तान आने पर राज़ी नहीं होते ? मुझे तो इस मुल्क से नफ़रत हो गई है ।"23

सकीना हिन्दू जाति से नफरत के कारण टोपी को अपने बर्तन में खाना खिलाने को भी मना कर देती है । "मैं उस हिन्दू को अपने बर्तन में खाना नहीं खिला सकती ।"24 सकीना के दिल की नफरत आक्रोश बन चुकी थी । वह किसी भी हाल

में इस नफरत को कम नहीं कर पा रही थी । टोपी के लाख चाहने पर भी सकीना ने राखी नहीं बाँधी और एक दिन सकीना अपने पति और बेटी और अपनी इस नफरत के साथ जम्मू चली गई ।

'सीन : 75' का पात्र भोलानाथ चोपड़ा उर्फ खटक लघुता ग्रन्थि से पीड़ित है और फोर्थ क्लास के कर्मचारी हैं । वे शंकालु प्रवृत्ति के हैं । भोलानाथ जी 'सुरसिंगार हाउसिंग सोसायटी लिमिटेड' में रहते हैं । वे हमेशा यह चाहते थे कि उस सोसायटी में उनके अतिरिक्त कोई और न रहे और यदि रहे भी तो उनको उस सोसायटी का मालिक माने अतः बिल्डिंग में जितने भी लोगों के घरों में नौकर हैं वे सभी उनको अपना मालिक मानें । वह अपनी पत्नी पर हमेशा शंका किया करते थे । कोई भी किरायदार बिल्डिंग में आता तो खटक जी को अपनी पत्नी की चिंता हो जाती । वह भुनभुनाना शुरु कर देते । इसीलिए जब अमजद अली सोसायटी में आया तो उन्होंने छान-बीन करना शुरु कर दी कि परिवार वाला है या कुँवारा । परन्तु खटक जी के लिए यह किसी क़यामत से कम नहीं था कि वह परिवार वाला नहीं था और नौकर बहुत सारे थे ।

लघुता ग्रन्थि के कारण व्यक्ति का व्यवहार सामान्य न रहकर असामान्य हो जाता है और वह अप्राकृतिक व्यवहार करने लगता है । खटक जी अपनी पत्नी के प्रति इतने अविश्वासी हैं कि प्रत्येक मिलने-जुलने वाले पुरुष से वह अपनी पत्नी से राखी बँधवा दिया करते थे । एक दिन मिढा साहब की पत्नी सरला की दोस्ती रमा से हो जाती है । दोनों में अच्छी बनने लगती है । मिढा साहब रमा की मुस्कुराहट के क़ायल हो जाते हैं । एक दिन जब सरला एक जगह पूजा में गई थी किन्तु रमा की तबियत अच्छी न होने कारण वह पूजा में नहीं आयी थी । मिढा जी मौक़े का फ़ायदा उठाकर सरला की ओर से रमा को देखने चले जाते हैं । तबियत पूछ कर ज़िद करके सर दबाने लगे । तभी भोलानाथ जी आ गए । "दूसरे ही दिन रक्षा-बन्धन था बाक़ी सारा दिन भोलानाथ और रमा में लड़ाई हुई । और दूसरे दिन मिढा ने रमा से राखी बँधवा ली । इसलिए भोलानाथ को ज़रा किसी पर शक होता वह तड़ से उसके हाथ में रमा से राखी बँधवा देते "कर साले इश्क़ अपनी बहन से !"25

भोलानाथ जी की तरक्क़ी हो जाती है तो वह एक फ्लैट बुक करते है । रमा यह फ्लैट अपनी आँखों के सामने बनवाना चाहती है । इसलिए वह पूरा दिन फ्लैट पर रहती । मनचनदानी के पास प्लम्बिंग का ठीका था । मनचनदानी और रमा में दोस्ती हो जाती है । दोनों घुल-मिल जाते हैं । भोलानाथ को शंका होने लगी । "थोड़े दिनों बाद उन्हें यह शक घुन की तरह लग गया कि बनते हुए फ्लैट में जाने क्या-क्या होता होगा ? और साहब शक का इलाज तो हकीम लुक़मान के पास भी नहीं था, बेचारी रमा तो किस खेत की मूली थी । चुनाँचे रक्षाबन्धन के दिन मनचनदानी को राखी बाँधकर अपनी तरफ़ से यह क़िस्सा ख़त्म कर दिया ।"26

भोलानाथ में प्रदर्शनवृत्ति के भी दर्शन होते हैं । यह प्रवृत्ति मध्यमवर्गीय लोगों में पायी जाती है । अर्थ के अभाव में भी किसी भी प्रकार से यह मध्यम वर्ग का व्यक्ति प्रदर्शन कर ही लेता है । एक दिन अपने को ऊँचा दिखाने के लिए भोलानाथ श्रीवास्तव जी को क्वालिटी में खाना खिलाने ले जाता है । श्रीवास्तव जी ने मीनू कार्ड उठाया और आर्डर देने लग गये । "श्री वास्तव जी आर्डर देते जा रहे थे । और खटक जी दिल ही दिल में, जल्दी-जल्दी हिसाब करते जार हे थे । भोलानाथ खटक श्रीवास्तवजी की आवाज़ के गहरे कुँए में डूबते चले गये और उनका दिल उनकी जेब के रेगिस्तान मे भटकता रहा । आर्डर सुनते-सुनते भूख मर गयी । सत्तासी रुपये सोलह पैसों का बिल आया । और वह तो खैरियत यह हुई कि खटक जी बिल वसूलने दौरे से लौटे थे । इसलिए जेब में थे ।"27

भोलानाथ खटक ने श्रीवास्तव जी और कालोनी पर अपनी धाक तो जमा ली किन्तु रास्ते भर वे सत्तासी रुपये सोलह पैसों के बिल और उस पर पाँच रुपये चौरासी पैसों की टिप के बारे में सोचते रहे । "और खटक जी यह सोच-सोचकर, अन्दर-ही-अन्दर, सूखे जा रहे थे कि यह तिरानवे यह तिरानवे रुपये कहाँ से आयेंगे ।"28 अर्थकुंठा व्यक्ति में दिखावे की प्रवृत्ति को जन्म देता है । आर्थिक रूप से कमज़ोर होने पर भी खटक जी अर्थ सम्पन्न होने का दिखावा करते हैं जिससे कालोनी के लोग उन्हें मान-सम्मान दें ।

सीन : 75 की रमा चोपड़ा में भी प्रदर्शनवृत्ति के दर्शन होते हैं । रमा अक़्सर दुकानों में जाती वहाँ मँहगी-मँहगी साड़ियाँ देखती और वो ऐसी दुकानों में जाती

जहाँ भीड़ होती । साड़ी देखते-देखते वह अमीर औरतों से दोस्ती करने का प्रयत्न करती और कामयाब भी हो जाती । क्योंकि वह दुकान में साड़ी में कुछ न कुछ कमी निकालती और उस औरत को दूसरी दुकान में ले जाती जिससे उस औरत का तीस-चालीस रुपये का फ़ायदा हो जाता । इसलिए उसकी दोस्ती हो जाती और जब वो औरत पूछती कि आप कहाँ रहती हैं ? "इस सवाल से रमा हमेशा घबराया करती थी । यह कहने में सुबकी होती थी कि ग्रेड-फोर आफ़िसर्ज़ हाउसिंग सोसायटी में रहती है । तो कहती, "क्या बताऊँ बहेन जी बम्बई में कहीं रहन को जगह मिलती है ? तीन फ्लैट बुक करवा रक्खे हैं । एक पेडर रोड पर, एक कफ़ परेड पर और तीसरा जूहू में । पर बन ही नहीं चुकते किसी तरह । एक सम्बन्धी के साथ टिके हुए हैं बान्द्रा ईस्ट में । बडा तकलीफ़ है ... बातों बातों में वह उस औरत का नाम-पता मालूम कर लेती । फ़ोन का नंबर लिख लेती । और यदि वह औरत किसी पैसे वाले घर की होती तो दो-एक बार फोन करती । और फिर उसके यहाँ आना-जाना शुरु कर देती ।"29

प्रायः प्रत्येक स्त्री-पुरुष में कामेच्छा की भावना स्वाभाविक रूप से पायी जाती है । किंतु इसके विपरीत यदि समान लिंग वाले व्यक्ति यौन सम्बन्ध रखते हैं तो उसे कामजनित कुंठा कहा जाता है । "यदि दो पुरुषों के बीच इस प्रकार के सम्बन्ध हों तो उस प्रकार की समलैंगिकता को Homosexuality कहा जाता है । यदि दो स्त्रियों के बीच में समलैंगिक यौन सम्बन्ध होता है तो उसे Lisbianism कहा जाता है । और इस प्रकार की स्त्रियों को Lisbian कहा जाता है ।"30

किसी भी मनुष्य में कामेच्छा की भावना का प्रथम रूप तो संतानोत्तपत्ति ही होता है । किन्तु यदि यह इच्छा केवल आनंद प्राप्ति के लिए हो, और उसके लिए भी अप्राकृतिक तरीके अपनाए जाएँ तो यह कामजनित कुंठा का रूप ले लेता है । इस विषय में डॉ० मनीषा ठक्कर लिखती हैं - "जब तक नैसर्गिक और सहज ढंग से मनुष्य काम के आनंद को भोगता है, वहाँ तक तो ठीक है, किन्तु जब वह अप्राकृतिक या गैरवाजिब तरीकों को अपनाता है तो उसे कामजनित विकृति कहा जाएगा और इन कामजनित विकृतियों से ही काम कुंठाओं का उदभव होता है ।"31 हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक विश्लेषणात्मक

अध्ययन डॉ० राही मासूम रज़ा ने भी अपने उपन्यासों में कामजनित कुंठा से ग्रस्त पात्रों का चित्रण किया है ।

'आधा गाँव' उपन्यास का पात्र अशरफुल्ला खाँ कामजनित कुंठा से ग्रस्त है । वह नमकीन लड़कों को अपनी कोठी में रखते हैं तथा उनके साथ गुदा मार्गीय मैथुन करता है । ऐसे लोग काम केवल अपने आनंद की अनुभूति के लिए करते हैं । उनमें यह कुंठा इतने प्रबल रूप में होती है कि कोई और उनके यहाँ रखे गए लौंडे को छू ले, या हँस के बात कर ले तो उनके अन्दर ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो जाता है । वह अपने यहाँ रखे हुए लौंडे के साथ यौन सम्बन्ध रखते हैं । "मशहूर था कि सलीमपुर के ज़मींदार अशरफुल्ला खाँ 'अशरफ़'अपने दादा के क़लमी दीवान की तरह उस लौंडे को भी रक्खे हुए थे । और फ़ुरसत में इन दोनों ही के पन्ने उल्टा-पल्टा करते थे ।"32 यहाँ तक कि ऐसे लोग इन पर अपना अधिकार समझते हैं तथा किसी और का उसको छूना अथवा देखना भी गवारा नहीं करते । "अगर वह कभी किसी की तरफ़ देखकर मुस्कुरा दिया है तो वह जल-जल गये हैं, और उन्होंने उसे औरतों की तरह कोसन दिये हैं । बार-बार कहा है "आज सता ले साले, ज़ालिम ! जब मर जाऊँगा तो याद करेगा ।"33

उसी प्रकार से तक्क़न मियाँ भी कामजनित की भावना से ग्रसित हैं । तक्क़न मियाँ कम्मो को अक्सर गोदाम में ले जाया करते थे । कम्मो का जी चाहता था कि वह गाँव के बच्चों के साथ खेले किन्तु सभी को पता था कि वह हरामी है इसलिए उसके जीवन में सन्नाटा ही रहा । "उसे बचपन का कोई खेल ही नहीं आता था । जब वह जवान होने लगा, तब भी उस जानलेवा सन्नाटे ने उसका पिंड नहीं छोड़ा । फ़र्क़ इतना हुआ कि उसका ज़्यादा वक़्त पाख़ाने में गुज़रने लगा, उसकी आँखों के काले हल्के पड़ने लगे । उन्हीं दिनों उसे तक़्क़न मियाँ गोदाम ले गये । उनके साथ गोदाम जाने का मतलब सबको मालूम था । लड़कों ने जुमलेबाज़ी शुरु कर दी, और कम्मो ने घर से निकलना बिल्कल बन्द कर दिया ।"34 इसका कुप्रभाव कम्मो कम्मो के चरित्र पर यह पड़ता है कि वह स्वयं हमेशा लज्जित अनुभव करता है और किसी को आँख उठाकर देखा नहीं पाता ।

'दिल एक सादा कागज़' के पात्र अब्दूस्समद खाँ जो खानसामा हैं, कामजनित कुंठा से ग्रस्त हैं जो अपने नीचे काम करने वाले लौंडे शर्फुआ के साथ इश्क़बाज़ी करते हैं । ऐसा करके वह आनंद की अनुभूति करते हैं । "लौंडा चोंचले कर रहा था अब्दुस्समद खाँ गिड़गिड़ा रहे थे, "अरे जालिम, मुझे क्यों सताता है ! "हम रोज़ाना झांसा नहीं खायेंगे ।" खाँ साहब के नीचे काम करने वाले लौंडे ने कहा, "लैला मजनू का नाटक खेलने पर तैयार रहते हो, पर गाँठ से पैसा नहीं निकालते । "अब्दुस्समद खाँ नंगे । अब्दुस्समद खाँ नंगे ... " रफ्फ़न तालियाँ बजाने लगा । अब्दुस्समद खाँ घबराके उठ बैठे । उठे तो उनकी लुंगी गिर गयी । उनके नीचे काम करने वाला लौंडा आराम से उठा । मुसकुराया । कमरबन्द बाँधता हुआ पैन्ट्री में चला गया ।"35

इस उपन्यास के एक और पात्र मौलवी तक़ी हैदर है जो रफ्फ़न और ख़दीजा को दीनियात पढ़ाने के लिए रखे जाते हैं । दोपहर में शर्फुआ मौलवी साहब के पांव दबाने जाता तो दरवाज़ा अंदर से बंद लिया जाता । अब्दुस्समद खाँ को इस बात का शक होने लगा और खाने का मज़ा बिगड़ने लगा । एक दिन कर्नल साहब ने खाने की मेज़ पर मौलवी साहब को बोल दिया कि खाने का मज़ा बिगड़ गया है । यह सुनकर रफ्फ़न बोल पड़ा । "बात ई है दादा कि शर्फुआ बेवफ़ा हो गया है । बेवफ़ा का मतलब बेशरम होता है हम ओको कानी कै मरतबा मोली साहब के कमरे में नंगा देख चुके हैं । "36

मौलवी तक़ी हैदर रफ्फ़न को भी दीनियात पढ़ाने के बहाने उसके साथ यौन सम्बन्ध रखने का प्रयत्न करते हैं । "उसे कुरआन पढ़ाने के लिए जो मोलवी तक़ी हैदर रखे गये थे वह गर्मियों में अपना कमरा बन्द करके उसका पाजामा उतारने की कोशिश किया करते थे । पहले दिन तो वह हक्का-बक्का देखता रह गया कि मौलवी साहब कर क्या रहे हैं ... शायद, कुरआन पढ़ाने का यही तरीक़ा हो । पर जब मोलवी अपना पाजामा खोलकर उसे अपनी गोद में घसीटने लगे तो वह डर गया । कोई सख़्त-सी चीज़ उसकी रीड की हडडी और कूल्हे में बार-बार गड़ रही थी, जैसे कोई जगह तलाश कर रही हो । मोलवो साहब की दाड़ी गरदन में चुभ रही थी । वह रोने लगा । परन्तु मोलवी साहब से वह बहुत डरता था और

वह कह रहे थे, "घबराओ मत । हम बहुत धीरे-से करेंगे ।" और उसने देखा कि मोलवी साहब अपने हाथ पर थूक रहे हैं। वह भाग खड़ा हुआ ।"37

'सीन : 75' की रमा और सरला भी लेस्बिन हैं । जो एक-दूसरे के साथ यौन सम्बन्ध रखती हैं और शारीरिक सन्तुष्टि प्राप्त करती हैं । दोनों को अपने पति में कोई दिलचस्पी नहीं है । उन्हें एक-दूसरे के साथ आनंद प्राप्त होता है । "यह क्या साड़ी बाँध रक्खी है तुमने ! पंजाबियों को साड़ी बाँधना कभी नहीं आयेगा ।" रमा हँसने लगती । सरला भी हँसने लगती । रमा साड़ी खोल देती । सरला कहती, "हाय रमा, तुम्हारी कमर क्या हुई··· " सरला हँसते हुए उसकी कमर में हाथ डाल देती और कहती, "उनको तो बड़ी तकलीफ़ होती होगी तेरी कमर तलाश करने में ।" इतना कहकर गुदगुदा देती और रमा हँसते-हँसते पलंग पर गिर जाती, दुहरी हो-हो जाती और सरला उसे सीधा करने में सारे बदन पर फिसलती रहती ।"38

'नीम का पेड' उपन्यास का पात्र सुखीराम प्रभुत्व ग्रन्थि से पीड़ित है । इस प्रकार की ग्रन्थि से पीड़ित मनुष्य दूसरे से श्रेष्ठ बनने का प्रयास करता है । ऐसा व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठतम मनवाने के लिए कुछ भी करता है । ऐसा व्यक्ति में धीरे-धीरे अहंकार की भावना पनपने लगती है । सुखीराम बुधीराम का लड़का है । बुधीराम ज़ामिन मियाँ का बेगार है, जो अब दुखतरी में मुस्लिम मियाँ के हिस्से में चला गया था । सुखीराम को एम० पी० का टिकट मिल जाता है । टिकट मिलते ही उसमें श्रेष्ठता की भावना आ जाती है । ज़ामिन मियाँ का बेटा सामिन मियाँ सुखीराम के यहाँ काम करता है जो बहुत ही ईमानदार है किन्तु सुखीराम को उसकी ईमानदारी खलती है उसे वह पसन्द नहीं करता क्योकि उसके कारण वह अपने कारनामो को अंजाम नहीं दे पा रहा था । वह धोकेबाज़ी करता है, रिश्वत लेता है । जब बुधीराम उससे इस रिश्वत के बारे में बात करता है तो वह उसे तोहफे का नाम देता है । इस पर बुधीराम कहता है "कऊनो फरक नाही ! ई रिश्वत के बहुत से नाम हैं सुखीराम ! कहूँ तोहफा है, कहीं नज़राना ह, कहूँ परजेंट और हूँ बस यूँ ही ले आया ।"39

वह अपने अहं में इतना अंधा हो जाता है कि उसे अपने बाप का यूँ टोकना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था । बुधीराम देख रहा था कि इतना पैसा कहाँ से

आ रहा है । वह जब इस बात का विरोध करता है तो सुखीराम अपने बाप को टका सा जवाब देता है "अगर आपको मेरी मेहनत की कमाई हराम लगती है तो अब तक आपने जो खाया है उसे उलट दीजिए, हलक में उँगली डालकर उलटी कर दीजिए !"40

यहाँ तक कि वह ज़ामिन मियाँ के एहसानों को भी भूल गया था जिनके कारण वह स्कूल जा सका और आज एम० पी० बना बैठा था । वह किसी भी तरह सामिन मियाँ को नीचा दिखाने के प्रयत्न करता रहता । सुखीराम अपना राजनीतिक दिमाग चला रहा था इसलिए वह सामिन से दूरी बनाये रखना चाहता था । वह उसकी ईमानदारनि पर शक करता है ।

सुखीराम अपने नशे मे चूर था । किन्तु कोई न कोई मुसीबत उसे घेरे जा रही थी । वह कललिनी नाम की औरत से चुचाप शादी कर लेता है । जिसका पता न उसकी पत्नी को है न बाप सुखीराम को । जब गाँव में उड़ते-उड़ते यह ख़बर उसके घर तक पहुँची तो उसकी माँ इस बारे में उससे पूछती है तो वह झूठ बोल देता है "कैसी बात करत हो अम्मा, अपनी देवी जैसी बीवी को छोड़कर दूसर औरत को देखे का का ममतलब ? ऊ दिल्ली के एक सेठ की लड़की है । सेठजी उनका हमरे लगे भेजिन हैं । सेठ जी एक मिल लगावा चाहत हैं, मिल का परमिट चाहत हैं । इतने चालाक कि परमिट के बदले अपनी लड़की भेजिन हैं और कुछ रुपया-पैसा भी देइहें । मुला हम अपने बाप के बिटवा बेईमानी से कौनो हमसे कटाइ नाहीं सकत, चाहे सोना मा तौल दे । भगा दिया ससुरी का ।"41

सुखीराम अपने ही बनाये हुए जाल में फँसता जा रहा था । गाँव में किसी औरत की हत्या हो जाती है यह वही औरत है जिससे सुखीराम ने विवाह किया था । जब वह गाँव आयी थी तब सुखीराम ही उसे बजरंगी कमलिनी को डरा कर भगाने को बोलता है किन्तु उसका क़त्ल हो जाता है और इसमें भी सुखीराम फँस जाता है । इसमें भी वह झूठ बोलता है कि मैं इस औरत को नहीं पहचानता । दरोगा हशमत जब उसको पूछताछ करता है तो उसे भी अपनी बातों के जाल में फँसाकर कमलिनी हत्याकांड से स्वयं अंजान बताता है । किन्तु दरोगा बात की जड़ तक पहुँचान चाहते थे वह खोज बंद नहीं करते इससे परेशान होकर सुखीराम दरोगा हशमत का भी क़त्ल करा देता है ।

सामिन मियाँ को एम० एल० ए० का टिकट मिल जाता है । सुखीराम को इस बात से ईर्ष्या होती है । उसकी परेशानी और बढ़ जाती है । सामिन मियाँ गाँव में अपनी इज्ज़त बना लेते हैं । गाँव के लोग सामिन मियाँ के गुणगान करते हैं । सुखीराम उसकी तरक्की से जलता है । उसकी ईर्ष्या इतनी बढ़ जाती है कि वह सामिन मियाँ को किसी भी प्रकार से अपने रास्ते से हटाने के लिए वह शैतानी चाल चलता है । उसके बाप बुधीराम की तबियत खराब हो जाती है । "हुआ ये कि बुधीराम की बीमारी की ख़बर पूरे गाँव में फैल गई और अली सामिन खाँ जो उनके लिए सगे से भी ज़्यादा था, उनकी बामारी के बारे में सुनकर उन्हें देखने आने वाला था ।"42

सुखीराम की सामिन मियाँ के प्रति घृणा इतनी बढ़ गई थी कि वह सामिन मियाँ को मारने की योजना बनाता है । सुखीराम की पत्नी पेट से है । उसकी जचगी अस्पताल में होना है । इस अवसर लाभ उठाकर वह अपनी माँ और पत्नी को शहर से दूर अस्पताल भेज देता है ओर स्वयं दिल्ली जाने का ऐलान कर घर में ही छिप जाता है । हाथ में बन्दूक लेकर सामिन मियाँ की प्रतीक्षा करने लगता है । "सुखीराम की नज़र खिड़की पर टिकी रही । हल्का अँधेरा हो रहा था । तभी सामिन आता दिखाई दिया । एक पल के लिए सुखीराम मायूस हो गया, क्योंकि सामिन दो-चार लोगों के साथ आ रहा था । पर उसकी मायूसी तुरंत दूर हो गई, क्योंकि फाटक के पास आकर उन लोगों को सामिन ने विदा कर दिया और खुद फाटक खोलने लगा अंदर आने के लिए । सुखीराम के लिए यह सुनहरा मौका था । उसने अपनी तनी हुई बंदूक की ट्रिगर दबा दी । सामिन एक कराह के साथ वहीं गिर पड़ा ।"43

सामिन मियाँ को अस्पताल ले जाया जाता है और वह किसी तरह बच जाते हैं । इस बात की छान-बीन की जाती है कि गोली किसने चलाई । किन्तु सामिन मियाँ जानता था कि गोली किसने चलाई है किन्तु वह पुलिस को कुछ नहीं बताता । बुधीराम को सामिन मियाँ यह बात बता देता है । जब बुधीराम घर जाते हैं तो वहाँ पुलिस के साथ मुसलिम मियाँ खड़े हुए थे क्योंकि अपने बाप से छिपकर वह अपना घर मुसलिम मियाँ को बेच

चुका था अब मुसलिम मियाँ उस घर का क़ब्ज़ा करने आये थे । वह सुखीराम से कह रहे थे "जायदाद मेरी और कब्ज़ा आपका । यह सब कब तक चलेगा सुखीराम जी ..."44

"बस इतना सुनना था कि बुधई ने दरवाज़े क पास रखी कुल्हाड़ी उठाई और मुसलिम मियाँ और सुखीराम की ओर बढ़ने लगा । सुखीराम नीम के पेड़ की आड़ में खड़ा था । बुधई चुपचाप बढ़ा और एकबारगी सुखीराम वहीं ढेर हो गया ..."45

सुखीराम की घृणा ने उसे असाधारण बना दिया था जिसको अंजाम देने के लिए वह कुछ भी करने को तत्पर था । सुखीराम ने अपने अहं के कारण तथा स्वयं को श्रेष्ठतम बनाने के चक्कर में अपने परिवार वालों तथा सम्बन्धियों की भावनाओं से खेला और उनको धोखा भी दिया । किन्तु सृष्टि के निर्माण में कोई बाधा नहीं उत्पन्न कर सकता । सुखीराम ने स्वयं श्रेष्ठ बनाने के लिए गलत रास्ते अपनाए जिसका अंजाम हमारे सामने है ।

'आधा गाँव' का पात्र कम्मो जातिगत कुंठा से पीडित है । कम्मो का पूरा नाम कमालुददीन है । कम्मो को इस बात का सदैव दुख रहता है कि वह उसके बाप जवाद मियाँ की रखैल का बेटा है । गाँव के बच्चों के साथ वह खेल भी नहीं सकता था क्योंकि "इस गाँव में तो भंगियों-चमारों तक को मालूम था कि कम्मो हरामी है । उसके बाप की खरी हडडी उसे हलाली नहीं बना सकती थी । इसलिए वह गाँव के उन तमाम लोगों से जलता था जो हलाली थे । इसीलिए उसकी किसी बच्चे से दोस्ती नहीं हुई ।"46 उसका अधिकतर बचपन एकांकीपन में बीता । उसके चारों ओर सदैव सन्नाटा ही रहा । गाँव में बच्चे टोलियां बनाकर खेलते, शोर करते किन्तु कम्मो अकेला बैठकर उन्हें देखा करता । फुन्नन मियाँ के लड़के भी सय्यदों के साथ खेला करते इस कारण कम्मो उन लड़कों से भी दोस्ती नहीं कर पाया ।

कम्मो अन्दर ही अन्दर घुटने लगा । वह शारीरिक रूप से भी कमज़ोर होने लगा । "जब वह जवान होने लगा, तब भी उस जानलेवा सन्नाटे ने उसका पिंड नहीं छोड़ा । फ़र्क इतना हुआ कि वह पाख़ाने में ज़्यादा वक़्त गुज़ारने लगा और उसका मुँह पीला पड़ने लगा, उसकी आँखों क गिर्द काले हलके पड़ने लगे ।"47 तक्कन मियाँ ने इस बात

का लाभ उठाया । उसको अक्सर गोदाम ले जाया करते । वह उसके साथ समलैंगिक सम्बन्ध रखते हैं । गोदाम में ले जाने का मतलब सब जानते थे । एक दिन जवाद मियाँ ने कम्मो को तक्कन मियाँ के साथ देखा, जब वह गोदाम से निकल रहे थे । जवाद मियाँ ने उन्हें बहुत डाँटा । इसका प्रभाव कम्मो पर इतना पड़ा कि उसने किसी से बात करना भी बन्द कर दिया यहाँ तक कि वह किसी से आँख नहीं मिला पाता था ।

उसने स्वयं को एक सीमित स्थान दे दिया था जिससे वह बाहर निकलना नहीं चाहता था । वयस्क होने पर लड़के उसको देखकर जुमलेबाज़ी करते किंतु वह कुछ नहीं बोलता बस इतना ही किया कि उसने घर से निकलना भी बंद कर दिया । मानसिक रूप से वह चिंतित रहने लगा । उसका अंतर्मुखी व्यक्तित्व टूट रहा था ।

जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया उसके अन्दर इस बात की हीनता विकसित होती गई कि वह हरामी है । यह भावना आंतरिक होती है । इस भावना को वह चाहकर भी नहीं त्याग सकता । इस कारण वह अक्सर अकेले में बैठकर सोचा करता "वह भी कोई बाप हुआ कि बेटा जिसका नाम बताने से शर्माये और जिसकी बीवी अब भी किसी और आदमी के नाम से पुकारी जाती हो ! कमालुददीन वल्द सय्यद जवाद हुसैन ज़ैदी-और माँ रहमान-बो ! क्या शजरा है ? मगर यह बात वह जानता था कि अपने पैदा होने पर उसका कोई इख़्तियार नहीं था ।"48

कम्मो अपने पिता से बहुत नफ़रत करता था । यहाँ तक कि वह अपने बाप की नाजायज़ औलाद होने के कारण सईदा से अपने प्यार का भी इज़हार नहीं करता । वह भी जानता था कि उसकी शादी सईदा नहीं होगी क्योकि सईदा सय्यद है और वह अपने बाप का हरामी बेटा है । इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया कि सईदा के आने पर कम्मो खुश हो जाता है । "इस बात पर किसी ने इसलिए गौर नहीं किया क यह गौर करने की बात ही नहीं थी । कहाँ अब्बू मियाँ की बेटी सईदा और कहाँ जवाद मियाँ का हरामी बेटा कम्मो !"49

कम्मो होम्योपैथी का डॉक्टर बन जाता है । पाकिस्तान-विभाजन के बाद ज़मींदारी ख़त्म होने पर खरी हडडी की शान धरी रह जाती है । अब कम्मो के यहाँ दो सैयद लड़के काम करते हैं जिसे वह बात-बे-बात पर डाँटता रहता है । किन्तु वह सईदा से

शादी नहीं कर पाता । न ही किसी और से शादी करता है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि देखें तो तक्कन चा के कारण कम्मो में हीनता ग्रंथि उत्पन्न हो जाती है । जिससे वह मुक्त नहीं हो पाता । "तक्कन चाचा तो प्रौढ वय के हैं । उन पर इन बातों का अधिक असर नहीं पड़ता, परन्तु कम्मो के चरित्र पर उसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है । उसमें हीनताग्रंथि उत्पन्न होती है जिससे वह ताज़िन्दगी उबर नहीं पाता ।"50

'आधा गाँव' उपन्यास की पात्र सलमा उर्फ सल्लो एक सीधी-सादी लड़की है । उसका विवाह तन्नू से हो जाता है । पाकिस्तान बनने के बाद तन्नू पाकिस्तान चला जाता है । और वापस कभी नहीं आता । सल्लो अपने तीन बच्चों के साथ अपने माँ-बाप के घर रहती है । उसके जीवन में उदासी है, खोखलापन है । वह किसी को कुछ नहीं कह पाती । सल्लो अन्दर ही अन्दर कुढ़ती रहती है । उसके जीवन में रिक्तता है । वह पाकिस्तान को गाली देती है कि ना पाकिस्तान बनता न तन्नू वहाँ जाता ।

सल्लो की आत्मपीड़ा को कोई समझ नहीं पाता है । वह हर समय झुंझलाई रहती है । और इसलिए बिना बात के बच्चों को मारती है, पीटती है किन्तु तन्नू को कभी शिकायत नहीं करती । अब उसके बच्चे बड़े हो गए थे शद्दो को तो सवाल भी करना आ गये थे इसलिए वह अपने अब्बा के बारे में पूछा करती । "जब आपके अब्बा हैं तो हमरे अब्बा काहे नाहीं हैं ?"

"तोरे अब्बा भी हैं ।"

"कहाँ हैं ?"

"पाकिस्तान में"51

सल्लो शद्दो के सवालों से झुंझला जाती और शद्दो मारना शुरु कर देती । "झल्लाहट की आग इतनी तेज़ हुई कि उसे अपना वजूद पिघलता हुआ महसुस हुआ । चुनाँचे अपना कलेजा ठंडा करने के लिए उसने शद्दो को मारना शुरु कर दिया "लै" उसने शद्दो को रुई की तरह धुनक डाला, "ई माटीमिली मरो न जाती कि मोको कल पड़े !"52 इस पर रब्बन बी जब सल्लो को डाँटती तो वह और भड़क जाती "इ हमरी बेटी है हम मार डालेंगे, कोई से मतलब । अब हम उनन्हें का कहें जो ई आफ़त हमरे पेट पर मारके चले गये ..." 53

सल्लो मानसिक रूप से पीड़ा ग्रस्त हो गई । उसे दौरे पड़ने लगते और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य की मानसिक क्रियाओं का प्रभाव उसके शरीर पर पड़ता है । वह शरीर से एकदम कमज़ोर हो गई । तन्नू की जुदाई उससे बरदाश्त नहीं होती और वह हिस्टीरिया का शिकार हो जाती है । वह बीमार पड़ गई । डाक्टर कम्मो को बुलाया गया । "उसने अपना बक्स खोलकर दवाओं की शीशियों को टटोलते हुए कहा, "हिस्टीरिया है दवा दिये देता हूँ । वैसे तो इनका इलाज तन्नू है ... मगर अल्लाह ने चाहा तो शफ़ा हो जायेगी ।"54 सल्लो का पति तन्नू के पाकिस्तान चले जाने के कारण वह यौन-सम्बन्ध से अतृप्त है जिसके कारण सल्लो हिस्टीरिया नामक मानसिक रोग से पीड़ित हो जाती है । इस प्रकार पाकिस्तान का निर्माण सल्लो के जीवन की मानसिक त्रासदी बन जाती है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित पात्र :- प्रत्येक मनुष्य अपने धर्म का अनुसरण करता है । किन्तु कुछ मनुष्य धार्मिक विचारधाराओं से अधिक प्रभावित होते हैं । राहो मासूम रज़ा के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र देखने को मिलते हैं जो धार्मिक विचारधाराओं से अत्यधिक प्रभावित हैं । आधा गाँव उपन्यास के सुलैमान-चा बड़े ही धार्मिक आदमी थे । यह सुलैमान-चा अम्मू के दूध शरीकी भाई थे । अत्यंत धार्मिक होने के कारण सुलैमान-चा ने शादी भी नहीं की थी । उन्हें रोज़े-नमाज़ के आगे कुछ नहीं सूझता था । वे औरतों को अपने समीप नहीं आने देते थे । "लोगों का खयाल था कि उन्हें रोज़े, नमाज़ और कसरत के सिवाय कोई और शौक़ ही नहीं है । और औरतों से दूर भागते हैं ।"55 किन्तु अपनी देखभाल के लिए सुलैमान-चा ने घर में एक चमाइन डाल ली थीं जो झंगटिया-बो के नाम से जानी जाती थीं । यही चमाइन उनके तीन बच्चों की माँ भी बनीं ।

सुलैमान-चा कभी भी झंगटिया-बो के हाथ की गीली चीज़ को हाथ नहीं लगाते थे । "सुलैमान-चा बड़े मज़हबी आदमी थे, इसलिए वह झंगटिया-बो की छुई

हुई कोई गीली चीज़ इस्तेमाल नहीं कर सकते थे । इसलिए घर में एक औरत के आ जाने के बाद भी सुलैमान-चा अपना खाना खुद ही पकाना पड़ता था । दाल-सालन तो वह फुन्नन-दा या वाजिद-दा या सुमारी बुआ के यहाँ पकवा लिया करते थे ; रही रोटियाँ, तो वह खुद डाल लिया करत थे । और खाना खाकर पानी पीने के बाद खुदा का शुक्र अदा कर लिया करते थे ।"56 इसके अतिरिक्त सुलैमान-चा मोहर्रम के दिनों में झंगटिया-बो से दूर रहा करते थे । "क्योंकि सुलैमान-चा की मज़हबीयत इतनी जाग उठा करती थी कि मोहर्रम के दिनों में वह उसे रात को भी नहीं छुआ करते थे ।"57 रात को सुलैमान-चा मरदाने में चले जाते थे और झंगटिया-बो ज़नाने इमाम बाड़े के गोदाम में उठ जाया करती थीं ।

हकीम अली साहब अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति के हैं । यह डिप्टी अली हादी मियाँ के बड़े भाई हैं । गाँव में कोई भी बीमार पड़ता तो हकीम साहब को ही बुलाया जाता । किन्तु वह इतने धार्मिक थे कि हिन्दू मरीज़ की नब्ज़ देखने के बाद हाथ धो लिया करते थे । "उन्होंने एक काग़ज़ पर कुछ दवाएँ लिखकर वह काग़ज़ मरीज़ के मुँह पर फेंक दिया । मरीज़ दवाखाने की तरफ चला गया । हकीम साहब हौज के किनारे बैठकर उस हाथ को साफ करने लगे जिस हाथ से उन्होंने एक काफ़िर-और वह भी नीची ज़ात क एक काफ़िर-का हाथ छुआ था ।"58

इसके अतिरिक्त हकीम साहब पाँचो वक़्त की नमाज़ भी अदा करते हैं । मौलवी बेदार के साथ बात करते हुए वह नमाज़ के लिए वुज़ू करने उठ गए । "लाहौल-विला-कुव्वत !हकीम साहब ने कहा, "तोरी बात सुने में भूल गये कि कुल्ली किया रहा, कि ना किया रहा । हकीम साहब ने नाक धोते हुए कहा । "बाकी ओठरा कउन खोजिस ?" उन्होंने नमाज़ की चौकी पर बैठते हुए पूछा । फिर वह 'अल्लाहो-अकबर' कहकर जा-नमाज़ बिछाने लगे । "अल्लाहो-अकबर !" हकीम साहब ने नमाज़ की नीयत बाँध ली ।"59 नमाज़ पढ़ने के बाद हकीम साहब तसबीह भी पढ़ा करते हैं । "उन्होंने हकीम साहब से कहा जो नमाज पढ़कर तसबीह पढ़ रहे थे । "60

हकीम साहब को इस बात का बहुत दुख था कि कम्मो होम्योपैथी का डॉक्टर बन गया है । क्योंकि इससे उनके मरीज़ कम हो गये थे । किन्तु जब वह बीमार

पड़े और उन्हें कम्मो देखने आया तो उन्हें इस बात का बहुत बुरा लगा । कि मेरी खुदा की इबादत में कहाँ कमी रह गई जो यह दिन देखने मिला । "ज़िन्दगी-भर नमाज़-रोज़ा किया तो ओका बदला ई मिला कि डाक्टर कमालुद्दीन आके नबुज देख गये । हे बेटा, अल्लाह मियाँ कीहाँ का इंसाफ़-उंसाफ़ उठ गया है ..."61

कुलसूम मन्नत आदि मानने में विश्वास रखती है । जो फुन्नन मियाँ की पत्नी हैं । वह अपने पति फुन्नन मियाँ के बेदाग़ छूटने की दुआ करती है । वह मज़ारों पर जाकर मन्नतें मानती है । वह धार्मिक विचारधारा से प्रेरित है । उसका मानना है कि ताजियों अथवा दरगाहों पर मन्नत मानने से दिल की मुराद पूरी हो जाती है । मन्नत पूरी न होने पर भी उसका विश्वास डगमग नहीं होता था । वह पूरी लगन एवं श्रद्धा के साथ मन्नतें मानती थी । "उसने तो बड़े ताज़िये के चौक पर भी मन्नत मान डाली थी, लेकिन जब फुन्नन मियाँ को सज़ा हो गयी तो इससे उसके विश्वास को ठेस नहीं लगी । उसने सोचा की शायद मौला इम्तहान ले रहे हों । "62 जब कुलसूम को पता चलता है कि हम्माद मियाँ ने फुन्नन मियाँ के खिलाफ गवाही दी है । तो वह अपने खुदा से मदद माँगती है । "वह नजफ़ की तरफ़ मुँह करके खड़ी हो गयी और बोली, "हे मौला मुश्किलकुशा ! "तुम्हीं हमारी मुश्किल आसान करो ।"63

मौलवी बेदार हुसैन बीस साल से घर में अकेले थे । उन्होंने विवाह नहीं किया था । उनकी शादी इसलिए नहीं हुई थी क्योंकि उनके पिता मौलाना थे । "मौलाना ने शादी इसलिए नहीं की कि उनके वालिद क़िबलओ-काबा होने की हद तक मौलाना थे । बड़े नस्साब थे ।"64 इसीलिए जब मौलवी बेदार हुसैन बछनिया से निकाह करने की बात करते हैं । तो गाँव में सभी को इस बात पर ऐतराज़ होता है । क्योंकि बछनिया एक तो नीची जाति की है और दूसरे हरामी भी है । मौलवी बेदार जब हकीम साहब को इस विषय में बताते हैं तो उनको भी ऐतराज़ करते हुए कहते हैं । "भई,ऊ तो हरामी है ।"65 इस पर मौलवी बेदार हुसैन कुराने-हदीस का हवाला देते हुए कहते हैं "ई त कहीं ना लिक्खा है कि हरामी लड़की से निकाह नाजायज़ है ... आख़िर हमहूँ सुलतान, बमदारिस में भाड़ ना झोंका है । हुँआँ

कुराने-हदीस न पढ़ते रहे । "त का कहीं ई ना लिक्खा है कि हरामियन से बियाह ना करे को ..."66

मौलवी बेदार हुसैन की भतीजी आसिया भी इस रिश्ते पर आपत्ति जताती है । किन्तु मौलवी बेदार हुसैन उसका भी मुँह बन्द कर देते हैं । "इस्लाम छोटे-बड़े को नहीं मानता ।"67

टोपी की माँ रामदुलारी एक घरेलू औरत थीं । किन्तु बड़ी धार्मिक थीं । वह कृष्ण भगवान की बड़ी भक्त थीं । अपने पोते मुन्नी बाबू को रामायण, महाभारत आदि सुनाया करती थीं । एक दिन जब टोपी ने उनके कृष्ण को काला-कलूटा बोल दिया तो रामदुलारी ने टोपी को बहुत पीटा । इसके अतिरिक्त जब मुन्नी बाबू टोपी पर कबाब खाने का झूठा इलज़ाम लगाता है । तो "राम राम राम !" रामदुलारी घन्ना के दो क़दम पीछे हट गई ।"68 टोपी शुक्ला उसी प्रकार इफ्फ़न की दादी भी अत्यंत धार्मिक विचारधारा वाली थीं । इफ्फ़न के दादा तथा परदादा दोनों बहुत प्रसिद्ध मौलवी थे । इफ्फ़न के पिता पिता इतने धार्मिक थे कि वह हिन्दुओं का छुआ नहीं खाते थे । यही हाल उसकी परदादी का भी यही हाल था । इफ्फ़न दादी पर भी इन सब बातों का प्रभाव था किन्तु उन्ह हिन्दुओं से कोई बैर नहीं था । "इफ्फ़न की दादी भी नमाज़-रोज़े की पाबन्द थीं, परन्तु जब इकलौते बेटे को चेचक निकली तो वह चारपाई के पास एक टाँट पर खड़ी हुई और बोली : "माता मोरे बच्च को माफ करदयो ।"69

'ओस की बूँद' उपन्यास की गौण पात्र छोटी ममानी बड़ी ही धार्मिक विचारधारा वाली औरत थीं । वह विधवा हो गयीं थी । उन्होंने गुल्लू नाम के एक लड़के को गोद ले रखा था । "यह छोटी ममानी बड़े ग़ज़ब की थीं । अल्लाह रसूल से नीचे बात ही नहीं करती थीं और दिन-रात नमाज़ें पढ़ा करतीं थीं ।"70 घर में सभी उनसे डरा करते । क्योंकि वह सभी को नमाज़ पढ़ने के लिए डाँटा करतीं । "वह कई बार दुलहन बी को डाँट पिला चुकी थीं कि मँझली और छोटी से नमाज़ क्यों नहीं पढ़वाती ! अल्लाह इ चोंचला ना देखे वाला है छोटी बाजी । ..."71

'दिल एक सादा कागज़' उपन्यास की सैदानी बी एक ऐसी पात्रा है जो सदैव हदीस, कुरान आदि की बातें सबको बताया करतीं थीं । सैदानी बी की ज़ैदी विला में बड़ी आवभगत होती । जब वह आतीं तो घर की सारी औरतें उन्हें घेरकर बैठ जातीं । उनके पास एक 'बीबी का रौज़ा' हुआ करता था । "सैदानी बी फ़ौरन उसे छूकर अपनी उंगलियाँ चूमतीं और फिर वह एक पुरानी किताब निकालतीं और उसके एक-एक वरक़ का हाल गा-गाकर सुनातीं ।"72 घर की तमाम औरतें उन सब बातों को बड़े ही ध्यान से सुनतीं । "इस बीबी ने जीते-जी अपने ख़ाविन्द की ख़िदमत न की और इसीलिए मरने के बाद जहन्नम की आग में जल रही है । और इस बीबी ने अपने मियाँ के ऐबों पर पर्दा डाला तो जन्नत में सात हूरें इसकी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर कर दीं गयीं हैं ।"73

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में साम्प्रदायिक तनाव से प्रभावित पात्र :-

डॉ० राही मासूम रज़ा उन उपन्यासकारों में से एक हैं जिन्होंने साम्प्रदायिकता की समस्या को दूर करने का तथा उससे लड़ने का दायित्व उठाया । साम्प्रदायिकता को राही जी कोढ़ मानते थे । क्योंकि साम्प्रदायिक सोच मनुष्य की मनुष्यता का नाश कर देती है । राही जी ने अपने उपन्यास साहित्य में साम्प्रदायिकता के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त किया है । उनके उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र देखने को मिलते हैं जो साम्प्रदायिकता की भावना से निरन्तर जूझ रहे हैं ।

आधा गाँव उपन्यास के अन्तर्गत गंगौली गाँव में साम्प्रदायिक दंगों का प्रभाव देखा जा सकता है । जहाँ पाकिस्तान से आये मुस्लिम लीगी और बारिखपुर के स्वामी लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना उत्पन्न करते हैं । "सन 1936 के आस-पास मुस्लिम लीग ने साम्प्रदायिक तनाव को लेकर अपने लिए एक पृथक राज्य की माँग रखी । साम्प्रदायिक दंगे एवं तहस-नहस का वातावरण बना दिया ।"74

पाकिस्तान निर्माण हेतु मुस्लिम लीग ने साम्प्रदायिकता को अपना आधार बनाया जिसके फलस्वरूप उन्होंने साधारण जनता को मुस्लिम लीग को वोट देने के लिए

बाध्य किया । मुसलमान लोगों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काना शुरु कर दिया । जिसका चित्रण राही जी ने आधा गाँव उपन्यास में किया है । 1947 में जब कलकत्ता में 'डायरेक्ट एक्शन' के फलस्वरूप हिंसा की आग महानगरों भड़क उठी । तब इसका प्रभाव गंगौली में भी दिखाई दिया । साम्प्रदायिक उत्तेजना ने लोगों में डर पैदा कर दिया । हिन्दू-मुस्लिम तनाव ने गंगौलीवासियों के जीवन में हलचल पैदा कर दी थी । यहाँ की भोली भाली जनता यह नहीं समझ पा रही थी कि गुनाह यदि कलकत्ता के मुसलमानों ने किया है तो सज़ा गंगौली के मुसलमानों को मिल रही है ।

'आधा गाँव' उपन्यास में गंगौली गाँव में साम्प्रदायिकता का वातावरण दृष्टिगोचर हुआ है । जहाँ गंगौली निवासी मार-काट की ख़बरों को सुनकर भयभीत हैं । कलकत्ता, बिहार में मार-काट का भय और पाकिस्तान विभाजन की विभीषिका गंगौलीवासियों में भी देखने को मिलती है । पाकिस्तान निर्माण ने साम्प्रदायिक दंगों को हवा दी थी । इसीलिए मौलवी बेदार कहते हैं । "बाक़ी ई पाकिस्तान में कउनो-न-कउनो गड़बड़ ज़रूर है । जेह दिन से ई जिन्नवा मलऊन पाकिस्तान की बात निकालिस है, तेही दिन से माथा ठनक रहा । अब देख ल्यो । कलकत्ते में बलवा भाय । छपरे में भाय । दू-चार दिन में गाज़ीओपुर में हो जय्यहे ।"75

मौलवी बेदार जीवन भर कुँवारे रहे । उनके पिता को सैयद घराने की कोई बहू नहीं मिली जिसके कारण वे एकांकी जीवन व्यतीत करते हैं । उन्हें चौदह साल की बछनिया पसन्द आ जाती है जो कि हरामी है । किन्तु एक दिन बछनिया भी अपने प्रेमी सफिरवा के साथ भाग जाती है । और मौलवी बेदार वहीं के वहीं रह जाते हैं । अंत में वे पाकिस्तान जाने का फैसला कर लेते हैं । "न, हम ना रहेंगे । मौलाना ने कहा, "देहली के इमाम बाड़े पर सिख कब्ज़ा कर लिहिन हैं ।"76 और एक दिन मौलवी बेदार पाकिस्तान चले जाते हैं । पाकिस्तान बनने से भारत का हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मुसीबतों का सामना कर रहे थे । हुसैन अली मियाँ खबर देते हुए कहते हैं कि "मार बलवा ना हो रहा । सुन रह कि बिहार के कुल मुसलमान काट के डाल दिये गये ।"77

गंगौली में साम्प्रदायिक दंगों की कोई न कोई खबर का तांता लगा हुआ था । फुन्नन मिया इन ख़बरों से बहुत परेशान थे कि पता नहीं अब गंगौली में क्या होगा । इसीलिए वे तन्नू से कहते हैं । "अउर कुछ समझो में न आ रहा की आखिर किया का जाय । पाकिस्तान न बने पर त ई हाल है; अउर जो ई बहनचोद कहीं बन गया, त हम समझ रहें हैं कि गंगौलियो में खून-ख़राबा हो जय्यहे । हउर मादरचोद मातादिनवा अभइयें से कानाफूसी कर रहा इधिर-उधिर । सुन रहें की सलीमपुर बाग़ में एक ठो जलसहू भाय रहा रात को । गंगौली, अलावपुर, हँडरही अउर सलीमपुर पर एक्कै साथ हमला करै की और मियाँ लोगन के काट के डाल देवे की मिसकोट भई । अऊर ईहो तै भाय की जेके-जेके घर में कभई कोई चमाइन, ललाइन या भरिन-ओरिन डाली गयई होय, तेके-तेके घर की लड़कियन को निकाल लिया जाय !"78

इस घटना से इस बात का पता चलता है कि साम्प्रदायिक तनाव बढ़ाने और गंगौली में हिन्दू-मस्लिम एकता को भंग करने का काम कटटर हिन्दू और कटटर मुसलमानों ने किया । इसीलिए फुन्नन मियाँ भड़क जाते हैं कि मातादीन ऐसा कैसे कर सकता है । जिसको मन्दिर बनाने के लिए ज़मीन उन्होंने दी वह मुसलमानों को म्लेचछ कैसे बोल सकता है । गंगौली गाँव में चारों तरफ़ डर बना हुआ था । तभी मिग़दाद ने फुन्नन मियाँ से कहा, "की कानी कउन सुआमी जी आये हैं कानी कहाँ से । ऊहे गाँव-गाँव फिरके हिंदुअन को भड़का रहे ।"79

बछनिया सफिरवा के साथ भाग गई थी । काफी समय के बाद जब वह गंगौली वापस आती है तो उसे कोई पहचान नहीं पाता । तभी सल्लन ने उससे सवाल किया "तोको एकदम गंगौली कइसे याद आ गयी ।"80 बछनिया जवाब में बोली "मारे मार-काट मची है । जेको जो मिल रहा ऊ ओही को मार दे रहा जान से ।" इसी डर से एक दिन सफिरवा ने पाकिस्तान जाने का फैसला किया । सफिरवा को सबने बहुत समझाया पर वह न माना । "वह चला गया । दिल्ली और अमृतसर के बीच में रेल कहीं रुकी । बच्छन और सग़ीर फ़ातमा सरहद के इधर ही रह गयीं । सफ़िरवा बच्चों की लाशें लेकर सरहद पार कर गया ।"8।

पाकिस्तान से आए मुस्लिम लीगी मस्जिद में जोशीली तक़रीर करते हैं । मुसलमानों के दिमाग़ में यह बात डालते हैं कि उन्हें मुस्लिम लीग को वोट देना चाहिए । जिससे मुसलमानों के लिए एक अलग मुल्क बने । नहीं तो अंग्रेज़ों का साया हटते ही यह मसलमान हमें खा जायेंगे । हाजी गफ़ूर को तक़रीर बिल्कुल समझ नहीं आयी और वह गुस्से में मस्जिद से निकल आए । "उनकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि मुसलमानों को यह एकदम से एक पनाहगाह की ज़रूरत क्यों आ पड़ी है । और अंग्रेज़ो का वह साया कहाँ है जिसकी बात लड़कों ने धूमधाम से की थी ? गंगौली में तो अब तक कोई अंग्रेज़ नहीं गया था । और जब अंग्रेज़ हिन्दुस्तान में नहीं थे, तब आख़िर हिंदुओं ने मुसलमानों को क्यों नहीं मार डाला ?"82

दंगे स्वयं नहीं होते, उन्हें करवाया जाता है । दंगा करवाने वाले लोग चुपचाप इसका मज़ा लूटते हैं । आम जनता इन दंगों का शिकार होती है । यह दंगाई यही चाहते हैं कि आम लोगों में डर पैदा करें । और वे लोग इसका तमाशा देखें । धर्म के नाम पर दंगा करने वाले लोगों के कारण ही साधारण जनता में साम्प्रदायिक तनाव पैदा होता है । जिसका यथार्थ चित्रण आधा गाँव में हुआ है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में राजनीति से प्रभावित पात्र :-

एक सामाजिक प्राणी राजनीतिक प्रभाव से अछूता नहीं रह पाता । उसे यदि समाज में रहना है तो कहीं न कहीं वह राजनीति से प्रभावित होता ही है । समयानुकूल वह स्वयं को परिवर्तित कर समाज के नीति नियमों का पालन करता है । पराधीनता की जंज़ीरों से देश को आज़ाद कराने में अनेक भारतवासियों ने अपनी जान की बाज़ी लगा दी । ब्रिटिश सरकार ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को भंग करन का काम किया तो मंगल पांडे, बहादुर शाह ज़फर तथा झांसी की रानी ने लोगों में एकता की भावना जाग्रत की । "1957 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को नाना साहब, बहादुर शाह ज़फर, झांसी की रानी, मंगल पांडे आदि की एकता ने मिलकर मूर्त रूप पदत्त किया था ।"83

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में देश में स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात दो प्रकार की राजनीति का चित्रण मिलता है । राही जी के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र मिलते हैं जो राजनीति से प्रभावित हैं । जहाँ मुस्लिम लीग की स्थापना, पाकिस्तान की माँग, कम्युनिस्ट विचारधारा आदि राजनीतिक वातावरण दृष्टिगोचर हुआ है । असंतोषपूर्ण राजनीति ने देश को एक केवल कुर्सी प्रधान देश साबित कर दिया । यहाँ राजनीति में भ्रष्ट नेताओं की भरमार है । अपने स्वार्थ के लिए नेता किसी भी हद तक जाता है । राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में कुछ ऐसे ही राजनीतिक पात्रों का चित्रण किया है ।

आधा गाँव उपन्यास का पात्र परुसराम चमार एम० एल० ए० हो गया था । एम० एल० ए० बन जाने के बाद परुसराम चमार के दिन बदल गये थे । कुर्सी पर बैठकर गाँव के लोगों की समस्याएं सुना करता था । "परुसराम एक कुर्सी पर आराम से बैठा, कैप्सटन सिगरेट पी रहा और चुटकी बजा-बजाकर राख झाड़ रहा था । गाँव के दो-तीन चमार और दो-तीन अहीर ज़मीन पर उकड़ू बैठे हुए थे ।"84 परुसराम के पिता सुखराम के हकीम साहब कर्ज़दार थे । सुखराम ने अपने बेटे की राजनीतिक शक्ति का लाभ उठाते हुए हकीम साहब को एक सम्मन भेज दिया । "लोग उठ ही रहे थे कि सम्मन लेकर सिपाही आ गया । हकीम साहब के नाम सम्मन था । सुखराम चमार ने उन पर अदम-अदायगी-य-क़र्ज़ का दावा कर दिया था ।"85

परुसराम जब से एम० एल० ए० बना था तब गाँव के सैयद ज़मींदार लोग तंग आ गये थे । बस एक ही आदमी ऐसा था जो किसी एम० एल० ए० से नहीं डरता था । फुन्नन मिया । फुन्नन मियाँ परुसराम की नाक का बाल बने हुए थे । मियाँ लोग जब परुसराम के अच्छे दिन की बात करते तो फुन्नन मियाँ झल्ला जाते थे । परुसराम जब फुन्नन मियाँ से परेशान हो जाता है तो वह उनको अपने रास्ते से हटाने की योजना बना लेता है । परुसराम के पास उसकी अपनी छोटी-सी गुप्त सेना थी । जैसा कि अधिकतर नेताओं के पास ऐसे मौकों के लिए ऐसी गुप्त सेना होती है । जब फुन्नन मियाँ और छिकुरिया रात की महफिल से ठाकुर कुँवर पाल सिंह के घर से लौट रहे थे तभी अचानक उन दोनों पर हमला हुआ । "ई त बड़ी नामर्दी की बात है !" उन्होंने गिरते-गिरते कहा, टोक के मारा त मरद

जानें !" लाठी उनके कंधे पर पड़ी, "हट, ज़नखे !" उन्होंने बड़ी हिक़ारत से कहा । फिर रात जैसे उनकी आँखों में घुस गयी और फिर रात उनके खून में मिल गयी और फ़िर वह खुद रात का हिस्सा बन गये ।"86

परुसराम की पत्नी और हम्माद मियाँ की पत्नी में अनबन हो जाने के कारण हम्माद मियाँ बहुत चिंतित हो जाते हैं । उन्हें अपनी पत्नी के कारण परुसराम के घर जाना पड़ रहा था । वह परुसराम के घर जाकर बात करते हैं । इसके अतिरिक्त वह गया अहीर के विषय में भी बात करते हैं । जो इस समय जेल में था । "अब तुमसे हमको इसकी उम्मीद नहीं थी कि औरतों के झगड़ों को यहाँ तक ले आओगे । दोस्तों और दुश्मनों फर्क किया जाता है भई ! जब सारे मियाँ लोग तुम्हारे खिलाफ़ थे तो मैंने तुम्हारा साथ दिया था और आज मेरा आदमी हवालात में है ।" परुसराम को बोलने का मौका मिल गया । उसने अपनी राजनीतिक पद की शक्ति दिखाते हुए कहा "यह कैसे हो सकता है, मीर साहब ?" परुसराम ने कहा, "मैं अभी उस बहनचोद थानेदार को बुलवाता ह । सुन रहा हूँ कि मियाँ लोगों में पाँडे जी का आना-जाना बहुत हो रहा है आजकल । अब बताइये, यह ज़्यादती की बात है या नहीं ? इती तक़ावी यहाँ बाँटी गयी है ''' दो तरफ से पुख्ता सड़कें बन गयी हैं कि अब आधे घंटे में आप लोग शहर पहुँच जाते हो । गाँव में हर गली पक्की हो गयी है । दो स्कूल चल रहे हैं । और कोई सरकार इससे ज़्यादा क्या कर सकती है ? और फिर आप लोग तो जानते हैं कि पाकिस्तान बन जाने से मुसलमानों की पोज़ीशन हिन्दुस्तान में कितनी नाज़ुक हो गयी है । इन्हीं बातों से जनसंघों और महासभा वालों को मौका मिलता है । मैं नहीं चाहता कि मेरे इलाक़े में हिंदू-मुसलमान का टंटा खड़ा हो । और पाँडे जी को तो आप जानते ही हैं । एक छटे हुए बगुला भगत हैं । डाकुओं ग़ोलदार ।"87

हम्माद मियाँ को भी थोड़ी बहुत राजनीति आती थी । उन्होंने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं । हम्माद मियाँ ने अपनी पहुँच से गया अहीर को जेल से रिहा करवा लिया । ज़िला कांग्रेस कमेटी के सद ने परुसराम को समझाने के लिए अपने पास बुलाया । "हम्माद मियाँ बाबू जी (मुख्यमन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द) के ख़ास आदमी हैं । इसलिए उनका

ख़याल रखना चाहिए ।"88 इस पर परुसराम ने हम्माद मियाँ पर मुसलमानों को बहकाने का आरोप लगाया तथा उसके घर को पाकिस्तानियों का अडडा कहा । इसी बीच हम्माद मियाँ ने भी अपना काम कर दिया । "हम्माद मियाँ ने शहर के एक दुकानदार से परुसराम पर अदम-अदायगी-ए-कर्ज़ और चार सौ बीसी का मुक़दमा क़ायम करवा दिया । देवकठिया की एक आवारा औरत ने परुसराम के खिलाफ मार-पीट और ज़िना की रिपोर्ट लिखवा दी और खुद हम्माद मियाँ ने ज़मानत-मुचलके की कार्रवाई की रिपोर्ट दरख्वास्त पेश कर दी कि परुसराम से उनकी जान को ख़तरा है ।"89 इन सब घटनाओं के तहत परुसराम ने हम्माद मियाँ को पाकिस्तान चले जाने की धमकी दी । किन्तु हम्माद मियाँ कहाँ डरने वाले थे उसकी धमकी से । मुक़दमा हुआ । हम्माद मियाँ मुक़दमा जीत गए । परुसराम एम एल ए को सज़ा हो गई ।

'नीम का पेड' उपन्यास के पात्र मुसलिम मियाँ राजनीतिक क्षेत्र के बड़े खिलाड़ी माने जाते थे । वे राजनीति के रग में इतने रंगे हुए थे कि अपने सगे ख़ालाज़ात भाई ज़ामिन मियाँ के तो हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं । राजनीतिक चालें वे यूँ चला करते थे कि किसी को भनक भी न लगे और काम भी हो जाये । "मुसलिम मियाँ ज़मींदारी और सियासत के तौर-तरीके जानते थे यूँ ही लीगी होते हुए भी कांग्रेस सरकार में डिप्टी मिनिस्टर का ओहदा नहीं पा गए थे । उनके और ज़ामिन मियाँ में एक बड़ा फर्क था । मुसलिम मियाँ अलीगढ़ के पढ़े हुए थे-अहले ज़ुबान थे, समय के साथ चलना जानते थे । ज़मींदारी ऐसे चला रहे थे कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे । रैयतों पर जल्म वे भी कम नहीं करते थे पर बदनाम ज़ामिन मियाँ ज़्यादा थे, क्योंकि उन्हें चिकनी-चुपड़ी बातें करनी नहीं आती थीं ।"90

रामबहादुर यादव अली ज़ामिन खाँ के विरुद्ध लोगों को भड़का रहा था जिसके कारण ज़ामिन खाँ बहुत परेशान हो गये थे । इसीलिए ज़ामिन मियाँ उसे ठिकाने लगवा देते हैं । और अपने बँधुए बुधीराम से झूठी गवाही दिलवाते हैं । मुसलिम मियाँ किसी भी प्रकार से अपने ओहदे का लाभ उठाकर ज़ामिन खाँ को सज़ा दिलाना चाहते थे । इसीलिए जब रामबहादुर हत्याकांड का केस निकलता है तो मुसलिम मियाँ बुधीराम को ज़ामिन मियाँ के खिलाफ़ गवाही देने को बाध्य करते हैं । और ऐसे भी मुसलिम मियाँ बुधीराम पर एक के बाद

उपकार किये जा रहे थे । जिससे बुधीराम उनके उपकार के तले दब जाये । "क्या करे बुधई, मुसलिम मियाँ गाँव में आए तो अपनी दुखतरी वाली ज़मीन देखने भी निकल पड़े । बुधई की ज़मीन पर नीम का पेड़ देखा और पटवारी से कह दिया कि इस नीम की छाँव जहाँ तक जाती है वहाँ तक की ज़मीन बुधई की हुई ।"91

मुसलिम मियाँ अपने राजनीति के पासे फेंके जा रहे थे कि किसी भी प्रकार से ज़ामिन मियाँ को सज़ा हो जाये । बुधीराम ने ज़ामिन मियाँ का नमक खाया था तो वह नमक हरामी कैसे करता ? वह सामिन मियाँ के जाल में नहीं फँसता है । तब सामिन मियाँ दूसरी चाल चलते हैं । "साम, दाम, दंड, भेद की नीति में पारंगत थे मुसलिम मियाँ । बुधई के बारे में उन्होंने सोचा था कि बातों की चाशनी में ही फँस जाएगा । बस उसमें थोड़ी-सी मिलावट उन्होंने पेड़ की छाँव पर ज़मीन ज़मीन की भी कर दी थी पर बुधई उसमें फँसा ही नहीं ।"92 बुधीराम किसी भी प्रकार से ज़ामिन खाँ के खिलाफ गवाही देने को तैयार ही नहीं था । पर यह भी मुसलिम मियाँ थे । बाज़ी कैसे हार सकते थे । क्योंकि सियासत उसके रोम-रोम में बसी हुई थी । जिससे चाहकर भी वह नहीं निकल सकते थे । इसलिए अब वह बुधई को अपनी नीति में शामिल करने के लिए दूसरी चाल चलते हैं । वह बुधई को जलसे की रात घर बुलाकर उसकी पिटाई करवाते हैं । "असामी मेरा और गवाही देगा ज़ामिन अली खाँ की तरफ से ... बोल रामबहादुर का क़त्ल कहाँ हुआ था । बोल..." बुधई चुप्पियों में उनके गुस्सा और अपना दर्द बर्दाश्त करता रहा ।"93 ज़ामिन मियाँ को जेल हो जाती है । किन्तु इस पर भी सामिन मियाँ चाहते थे कि वह जल्दी जेल से न निकलें । और निकलें भी तो फिर से कुछ दिन के लिए अन्दर चलें जाएं । मुसलिम मियाँ ने इसके लिए एक वकील भी करते हैं । जिसका नाम उषाकांत है । उषाकांत उनकी बात से सहमत नहीं होता है । "मुसलिम खाँ का रग-रग सियासतदाँ हो चुका था । उनकी हर चाल में सियासत की कोई-न-कोई पेंच होती थी, यह बात उषाकांत जैसे नए दौर के लड़के क्या समझ सकते थे ?"94 सामिन मियाँ अपनी राजनीतिक चालों में कामयाब हो जाते हैं और ज़ामिन मियाँ को उम्र क़ैद की सज़ा हो जाती है ।

'नीम का पेड़' उपन्यास का पात्र सुखीराम बुधई का लड़का था । जो मुसलिम मियाँ की ज़मानत ज़ब्त कराकर एम पी बन गया था । वह राजनीति के रंग में इतना रंग गया था कि भला-बुरा भी नहीं समझता है । वह अपनी राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग कर रहा था । "अब कौन समझाए बुधीराम वालिद सुखीराम एम पी को । कहते हैं न ताकतवरों के ऐब नहीं होते, उनके तो शौक होते हैं । अवाम जिसे गुनाह समझती है वो तो इनके शौक हुआ करते हैं ।"95 सुखीराम की राजनीतिक चालों और घोटालों में कोई अड़चन न आये हेतु वह सामिन को भी इन सबसे दूर रखता था । सुखीराम एक सफल राजनीतिज्ञ बन गया था । वह पैसे का लेन-देन, रिश्वतखोरी सभी में पारंगत हो गया था । इसके अतिरिक्त वह कमलिनी नाम की लड़की से छिपकर दूसरी शादी भी कर चुका था जिसकी हत्या हो जाती है । वह इस गुत्थी से निकल नहीं पा रहा था । उन्होंने शादी कर तो ली कि वह एक नेता है तो उन्हें दूसरी शादी करने से भला कौन रोक सकता है । किन्तु वह शादी करके फँस गये थे । "पार्टी के एक बड़े नेता ने तब भी समझाया था उसे कि जितनी औरतें जिस नेता के पास होती हैं, उतना ही उसको ताकतवर माना जाता है । जो एक ही औरत से बँध जाए वह तो मूरख नेता माना जाता है ।"96 कमलिनी की हत्या ने सुखीराम एम० पी० को बुरी तरह फँसा दिया था । हशमत दरोगा के सवालों से परेशान होकर सुखीराम एम पी मेंहदी अली जो सोशल वर्कर हैं, उनकी सहायता लेता है और अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग कर हशमत दरोगा को भी अपने रास्ते से हटा देता है । राजनीति ने उसे अंधा कर रखा था । रिश्वतखोरी, घूसखोरी सब वह कुछ कर रहा था ।

सुखीराम का एक और काँटा अभी बाकी था । सामिन मियाँ । जो अब एम एल ए हो गए थे । गाँव की जनता सामिन मियाँ को सर आँखों पर बिठा रही थी जो सुखीराम एम पी को एक आँख नहीं भा रहा था । वह सामिन मियाँ को भी रास्ते से हटाने की योजना बना लेता है । उसका पिता बुधीराम बीमार हो जाता है । सामिन मियाँ बुधीराम को सगे से भी अधिक मानता था । "बस इस मौके ने उनके दिमाग को शैतानी बना दिया । सुखीराम ने सोचा कि गाँव तो छोड़ना ही है, लेकिन क्यों न जाने से पहले इस गाँव में बचे सारे काँटों को मिटा दे, ताकि उसकी वापसी का रास्ता खुला रह सके । उसके दिमाग

में आइडिया आया और वह तैयारी करने में लग गया । वह उस शाम की तैयारी करने लगा ।"97

सुखीराम जानता था कि उसके पिता बुधई की बीमारी की खबर सुनकर सामिन मियाँ एम एल ए उन्हें देखने ज़रूर आयेगा । और वही हुआ । "एम० एल० ए० अली सामिन मियाँ खाँ को भूतपूर्व एम पी सुखीराम के बाहर गोली लग गई, यह बात आग की तरह फैल गई थी ।"98 सुखीराम इस बात से बिल्कुल अंजान था कि वह गोली सामिन मियाँ को छूकर निकली थी जिससे वह मरा नहीं बेहोश हो गया था । जब बुधई को पता चलता है कि यह हरकत उसके अपने बेटे सुखीराम की है तो वह उसके कारनामों से तंग आकर अपने हाथों से अपने बेटे सुखीराम को मौत के घाट उतार देता है ।

सामिन मियाँ को एम० एल० ए० का टिकट मिल जाता है । जनता सामिन मियाँ के नम्र स्वभाव से पहले ही प्रभावित थी । सामिन मियाँ के एम० एल० ए० बनने के बाद जनता ने कुछ राहत की साँस ली थी । क्योंकि सामिन मियाँ में वफादारी, ईमानदारी जैसे गुण भरे पड़े थे । एक ईमानदार युवक गाँव नेता बना था । "जनता ने बदलाव की दिशा में जाना ही उचित समझा । राम खिलावन एम० पी० बन गया और सामिन मियाँ एम० एल० ए०। मदरसा खुर्द में जश्न का माहौल था ।"99 जनता का प्रेम देखकर सामिन मियाँ बहुत खुश थे । जीवन में पहली बार इतनी खुशी आयी थी । गाँव के लोगों को सामिन मियाँ से काफी आशाएं थीं कि अब कुछ अच्छा होगा । सामिन मियाँ भी अपने इस क्षण से बहुत खुश थे । "उनकी ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा हुआ था कि उनकी खुशी में पूरा गाँव शामिल था, किसी भय से नहीं प्यार से···"100 सामिन मियाँ एम० एल० ए० की ईमानदारी के कारण उनके अनेक दुश्मन भी बन गये थे । यहाँ तक कि राम खिलावन जो उनका अच्छा दोस्त हुआ करता था वह भी उनका दुश्मन हो गया था । "राजनीति की दोस्ती और दुश्मनी दोनों का ही कुछ ठिकाना नहीं होता । कब कौन किसका दुश्मन हो जाए, फिर किसकी दुश्मनी कब किसको किसका दोस्त बना जाए । राजनीति में रिश्तों का ताना-बाना ही कुछ ऐसा होता है, उसे सिर्फ वही समझ सकते हैं जो थोड़ा-बहुत राजनीति में दखल रखते हों । वर्ना आप तो सिर पीटते ही रह जायेंगे ।"101

गाँव में सामिन मियाँ एम० एल० ए० की लोक प्रियता बढ़ती जा रही थी । जिससे दूसरे युवा वर्ग के नेता परेशान थे । राम खिलावन तथा सुखीराम दोनों ही चिंतित थे । इसलिए राम खिलावन दिल्ली का रुख़ कर लेते हैं । "लेकिन असल में सामिन मियाँ की लोकप्रियता ने उसे गाँव छोड़ने को मजबूर कर दिया था । दिल्ली बसने का इरादा तो सुखीराम, भूतपूर्व एम० पी० भी रख रहे थे । पर उसके कारण दूसरे थे ।"102

सामिन मियाँ एम० एल० ए० को जब गोली लग जाती है तो पूरा गाँव उमड़ पड़ता है । सामिन भैया ज़िन्दाबाद के नारे पूरे गाँव में गूँजने लगते हैं । एक ईमानदार नेता पर हमला हुआ था । जिससे पूरा गाँव क्रोधित हो उठा था । "लेकिन गाँव वालों ने यह दिखा दिया था कि भले ही उनके पिता जी ज़मींदार रहे हों पर सामिन मियाँ को वे सबसे बढ़कर चाहते थे । कितने एम० पी०, कितने एम० एल० ए० गाँव मदरसा खुर्द की धरती पर पैदा हुए लेकिन एक सामिन मियाँ ही थे जिनके लिए वे दिलोजान से दुआएँ कर रहे थे । भगवान से उसकी सलामती की भीख माँग रहे थे । वह अकेला नेता था उनके गाँव का, जो उनके ही बीच से निकला था और जो दिल्ली-लखनऊ जाकर गाँववालों के लिए बड़ा नेता ही नहीं हो गया था । सिफ वही एक तो था जो गाँव वालों के बीच गाँव वालों की तरह ही रहता था-उनके सुख-दुख में सुखी-दुखी होता था । तो भला वे क्यों न उसके लिए दुआएँ माँगते ईश्वर से ।"103

'कटरा बी आर्ज़ू' उपन्यास का पात्र आशाराम कम्युनिस्ट विचारधारा का युवक है । आशाराम का मानना है कि कांग्रेस सरकार धोकेबाज़ है । उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता । जबकि उसके दादा बाबूराम कांग्रेसी हैं और आशाराम कांग्रेस सरकार का घोर विरोधी । इस कारण दादा-पोते में कभी बनती ही नहीं थी । "आशाराम को कांग्रेस सरकार पर बिल्कुल भरोसा नहीं था । सरकार चाहे नेहरु की हो, चाहे लालबहादुर की, चाहे मिसेज गाँधी की-कांग्रेस सरकार पूँजीवाद की दलाल और जनता की दुश्मन है । बजट चाहे मुरार जी बनाएँ चाहे सुब्रामिनियम-कांग्रेस सरकार का हर बजट जनता को लूटनेवाला और पूँजी के बड़े घरानों का मददगार है ...और फिर एक दिन आशाराम ने अपन कमरे से गाँधी जी की तस्वीर हटा दी । उसकी जगह कास्ट्रो की तस्वीर ने ले ली ।"104

आशाराम को गरीबों से हमदर्दी थी । वह बढ़ती हुई महँगाई, मज़दूरों आदि के लिए हड़ताल हेतु सदैव तत्पर रहता था । मोटर मिकेनिक्स यूनियन ने बाबू गौरीशंकर लाल पांडेय एम० पी० के नेशनल गैरेज में पहली बार हड़ताल की । आशाराम इस हड़ताल में भाषण देने वाला था । "मोटर मिकेनिक्स यूनियन ने पहली हड़ताल बाबू गौरीशंकर लाल पांडेय एम० पी० के नेशनल गैरेज में की । महँगाई भत्ता, मज़दूरियों में बढ़ती और बोनस के सवाल पर यह हड़ताल शुरु हुई ।"105 आशाराम पहली बार भाषण देने जा रहा था । उसका यह पहला राजनीतिक भाषण था । शम्सू मियाँ इस सभा में अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किये गए थे । किन्तु किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था । बस इतना था कि इस हड़ताल से जनता की आँखों में आशा की किरन दिखाई दे रही थी । "शम्सू मिया तो अपने डर के बावजूद बोनस बजट भी बना चुके थे । उनके चश्मे का नम्बर बदल गया है । वह सोच रहे थे कि अभी बोनस मिल जाए तो घर जाते-जाते किसी चश्मेवाले की दुकान पर पल-भर रुककर वह एक नया चश्मा ख़रीद लेंगे । देशराज सोच रहा था कि हाउस-फंड में चार सौ अस्सी रुपये की कमी रह गई है । तड़ से ज़मीन लेकर काम शुरु कर दूँगा । और फिर तो बिल्लो से शादी करने के लिए तैयार होना ही पड़ेगा··· मुरली अपने लिए ट्रांजिस्टर ख़रीदने का प्रोग्राम बना रहा था । गरज़ कि जितने आदमी थे उतनी आर्ज़ुएं थीं ।"106 पर इस भाषण और हड़ताल के अंजाम में आशाराम जेल चला जाता है । जब आशाराम की देशराज से दोस्ती होती है तब वह मध्यम वर्ग के नेतृत्व में क्रान्ति का सही तात्पर्य समझता है । जेल से निकलने के बाद वह साप्ताहिक नेशन में काम शुरु कर देता है । जिसके माध्यम से मज़दूर के विरोधी पूँजीपतियों की ख़बर लेता है ।

आशाराम का मानना था कि सरकार चाहे किसी की भी हो कांग्रेस गरीबों की दुश्मन है । वह उसे पूँजीपतियों की दलाल मानता है । आशाराम और उसकी प्रेमिका प्रेमा नारायण के राजनीतिक विचार अलग-अलग थे । राजनीतिक विचारों में मतभेद होने के कारण दोनों एक-दूसरे से विवाह नहीं कर पाते । प्रेमा को मिसेज़ गाँधी के सिवा कुछ नहीं दिखता था । और आशाराम सदैव मिसेज़ गाँधी के खिलाफ ही बोलता । इसीलिए आशाराम एक काग़ज पर मिसेज़ गाँधी की तस्वीर में उनकी मुस्कुराहट देखकर बोलता है । "यह राजनीति

का धन्धा छोड़ दें तो मॉडलिंग करके खा-कमा लेगी ।"107 उस दिन के बाद से आशाराम और प्रेमा में दूरी आ जाती है ।

आशाराम की प्रगतिशील विचार धारा के कारण उसके कितने दुश्मन बन गये थे । क्यों कि ज़रा कोई बात होती तो वह मोर्चा लेकर निकल पड़ता था । इसलिए आशाराम से कोतवाली भी हैरान हो गए थे । वे भी मान गये थे कि आशाराम को जेल भेजने का भी कोई फ़ायदा नहीं है । अशफ़ाकुल्लाह खाँ और जगदम्बा प्रसाद इस टोह में लगे रहते कि ऐसा क्या किया जाये कि आशाराम से स्थायी रूप से छुटकारा मिले । कांग्रेस सरकार तो आशाराम से परेशान हो गई थी । "आशाराम जैसों का मुसतक़िल बन्दोबस्त तो लगभग हर कांग्रेसी मंत्री करवाना चाहता था पर बुरा हो प्रजातंत्र का । इसलिए अशफ़ाकुल्लाह ख़ाँ किसी मौक़े की राह देख रहे थे और के० बी० आइ० फ़ाइल को कलेजे से लगाए अपनी तरक्क़ी के सपने देख रहे थे ।"108

आशाराम टार्चर के डर से कलकत्ता की जेल में क़ैदी हो जाता है । उसके नाम का जब वारंट निकलता है तो उसे जेल सबसे सुरक्षित स्थान लगता है । इसलिए वह बिना टिकट सफर करता है और पकड़ा जाता है । किन्तु वह जेल में भी टार्चर के सपने देखने लगा । आशाराम टार्चर के डर से झूठा बयान देने को तैयार हो जाता है । "तो एक दिन वह डरा-डरा जेलर के पास गया और यह उगल दिया कि कटरा मीर बुलाक़ी बम कांड का आशाराम वही है । उत्तर प्रदेश की पुलिस उसे तलाश कर रही है और वह किसी मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान देना चाहता है ।"109 बाबू गौरीशंकर पांडेय के सामने आशाराम हार जाता है । इमरजेंसी के बाद वह भी कांग्रेस में शामिल हो जाता है । आशाराम के चरित्र से पता चलता है कि राजनीति में पार्टी बदल लेना कोई नई बात नहीं है । ऐसे नेता समयानुकूल अपनी सोच बदल लेते हैं । अतः आशाराम के चरित्र के द्वारा कांग्रेस का विरोध स्पष्ट हुआ है ।

बाबू गौरी शंकरलाल पांडेय नेशनल गैरेज के मालिक हैं । वे कांगेंसी एम० पी० थे । वे पहला चुनाव कांग्रेस की टिकट पर जीते थे । वे एक अच्छी तक़रीर करने वाले नेता माने जाते थे । बाबू गौरी शंकरलाल एक पेशेवर नेता थे । दल बदलना उन्हें बड़े अच्छे से आता था । इसीलिए जब चरणसिंह कांग्रेस से अलग हुए । तो वह भी कांग्रेस से

अलग हो जाते हैं । चरणसिंह की सरकार टूटने पर वे वापस कांग्रेस में आ जाते हैं । "आज़ादी के बाद से कांग्रेस में ईमानदार लोगों की खपत यूँ भी कम हो गई थी । बाबू गौरीशंकर जैसे लोग तो टिकटों की औलादें हैं । जहाँ टिकट बिकता है, वहाँ यह लोग पैदा हो जाते हैं ।"।।0

बाबू गौरीशंकर लाल पक्के राजनीतिक थे । इसीलिए जब सड़क का नाम बदलने की बात आती है तो वह खुले तौर पर भाषण दे देते हैं कि "सन बयालीस के शहीदों से जनसंघ को क्या मतलब,...उनकी वारिस कांग्रस और केवल कांग्रेस है । और यदि सड़क का नाम बदलना ही है तो महात्मा गाँधी, या नेहरु रोड क्यों न रखा जाए..."।।। परन्तु गौरीशंकर मन से यह चाहते थे कि सड़क का नाम उनके स्वर्गीय पिता के नाम पर रखा जाए । ऊन्होंने तो यह प्रस्ताव नहीं रखा । किन्तु अन्य कांग्रेसियों ने ज़िला कमटी के पास यह प्रस्ताव रख दिया कि इस सड़क का नाम 'पंडित शिवशंकार पांडेय' रखना चाहिए । किन्तु गौरी शंकरलाल के पिता का सन बयालीस के आन्दोलन से कोई लेना-देना नहीं था । अब गौरी शंकरलाल को किसी भी तरह से अपने पिता को देशभक्त साबित करना था । पर यह भी कैसे हो ? क्योंकि कांग्रेस कमेटी में यह सभी को पता था कि शिवशंकर पांडेय ने अपने आदमियों से सरकारी ख़ज़ाना लुटवाया था । और उसी पैसे से अपनी कोठी बनवायी थी । इसलिए बाबू गौरीशंकर अपना राजनीतिक दिमाग लगाते हैं । वे अपने पिता के दोस्त से एक किताब लिखवाते हैं । "शमीम साहब ने 'सन बयालीस-एक आप बीती' लिखी । इस आप बीती में उन्होंने यूँ ही एक जगह पंडित शिवशंकर पांडेय का ज़िक्र निकाल दिया और लिखा : यह बात वह अपने ज़ाती तजरुबे जी बुनियाद पर कह सकते हैं कि उनके बारे में यह बात बिल्कुल ग़लत उड़ाई गई है कि सरकारी ख़ज़ाने का पैसा उन्होंने खुर्द-बुर्द किया । वह दो लाख अस्सी हज़ार रुपये खुद मोल्वी साहब के सामने मरहूम डाक्टर लोहिया और आचार्य नरेन्द्रदेव को दिए थे ।"।।2 इतना ही नहीं गौरी शंकरलाल ने इस किताब के लिखने में दस हज़ार रुपये खर्च किये थे । इसके अतिरिक्त वे दिल्ली के एक पंजाबी पत्रकार से अपने पिता की जीवनी भी लिखवाते हैं । और उस जीवनी ने यह साबित कर दिया कि उनके पिता एक बड़े देशभक्त थे ।

बाबू गौरी शंकरलाल बाबू कमलापति त्रिपाठी के ख़ास आदमी थे । गौरी शंकरलाल को किसी भी तरह मंत्री बनना था । मज़दूर आन्दोलन जारी थे । कम्यूनिस्ट किसी भी रूप में हार मानने को तैयार नहीं थे । आशाराम इन सब यूनियन का कर्ता-धर्ता था । ऊपर से हुक्म आया था मज़दूर-आन्दोलन को कम्यूनिस्ट के हाथ से किसी भी तरह निकाल लेना चाहिए । इस समस्या का हल निकालने के लिए वह शम्सू मियाँ और देशराज को खाने पर बुलाते हैं । क्योंकि आशाराम देशराज का दोस्त है । "हम तो चाहते हैं कि यूनियन बने, बाबू साहब ने बात आगे बढ़ाई, "भाई आशाराम से क्या मतलब ? हम कौन, कि हम ख्वाहमख्वाह ! भई आपसे क्या मतलब ? न आप मोटर न आप मोटर मिकैनिक । इस वास्ते खुद श्रीमती गाँधी ने आदेश भेजा है कि यूनियन बनाई जाए, परन्तु उसमें वर्कर लोग काम करें । राजनीति न घुसने पाए । तो हमने यह फैसला किया है कि पहले की तरह शम्सू मियाँ तो प्रेसिडेंट हो जाएँ और देसराज सेक्रेटरी । बल्कि हम तो यहाँ तक सोच रहे हैं कि गैरेज की तरफ़ से ब्यरर लोग को कुछ जेबखर्च भी मिलना चाहिये । इससे वर्कर्ज़ और मालिक के बीच एक नये रिश्ते की बुनियाद पड़ेगी ।"।।3 देशराज जेबखर्च की बात सुनकर इन्कार कर दिया । वह खुद को बेचने पर राज़ी नहीं हुआ । डिनर फ़ेल हो गया ।

बाबू गौरीशंकर लाल का देशराज और शम्सू मियाँ को खाने पर बुलाने का मक़सद कुछ और था । उत्तर प्रदेश में कोई बड़ा यूनियन नहीं था । इसलिए वे चुपके से ट्रेड यूनियन आन्दोलन में घुसना चाहते थे । वे ट्रेड यूनियन लीडर होकर केंद्रीय सरकार में आसानी से घुस सकते हैं । "वह एक 'नहरु मज़दूर सभा' की स्थापना करना चाहते थे । और यह काम वह अपने 'नेशनल गैरेज' से शुरु करना चाहते थे ।"।।4 गौरी शंकरलाल जैसे नेता अपना पद पाने के लिए कुछ भी करते हैं । गौरी शंकर लाल कांग्रेस से अलग हो जाते हैं । वह जनता पार्टी में चले जाते हैं । और फिर खबर आयी कि बाबू गौरी शंकरलाल पांडेय जीत गए ।

बलभद्र नारायण उर्फ टोपी शुक्ला एक ऐसा पात्र है जो अपने परिवार से उपेक्षित है । उसका पूरा परिवार जनसंघी है । इसीलिए उसकी विचारधारा भी जनसंघी हो जाती है । जब तक वह बनारस में रहता है । उसकी विचारधारा जनसंघी रहती है । टोपी

जब घर से निकलता है तो वह जनसंघी होता है । किन्तु अलीगढ़ पहुँचने के बाद टोपी के विचार परिवर्तित होते हैं और वह कम्युनिस्ट हो जाता है । टोपी जब अलीगढ़ आया था तो अनेक सपनों के साथ आया था । किन्तु यहाँ आकर उसने देखा कि यहाँ मुसलमानों से अधिक कम्युनिस्ट का डर है ।

टोपी शुक्ला स्कालरशिप का उम्मीदवार होता है । किन्तु वह स्कालरशिप टोपी को न मिलकर किसी मुसलमान को मिल जाती है । जब सात सौ बाईस लड़कों को छोड़कर वह स्कालरशिप एक मुसलमान लड़के को मिलती है । तब उसे पता चलता है कि वह एक राजनीतिक खेमे में खड़ा है । जहाँ पर राजनीतिक पहुँच होना बहुत ज़रूरी है । क्योंकि स्कालरशिप देने वाला उस लड़के के पिता का दोस्त था । जो जनसंघी थे । स्कालरशिप न मिलने से टोपी परेशान हो जाता है । "स्कालरशिप बन्द हो जाने से टोपी मुसीबत में फँस गया, क्योंकि मुन्नी बाबू तो नेता बन चुके । भैरव भी उसी रास्ते पर जा रहा था ।"॥5

म्युनिसिपैलिटि के चुनाव में उसका बड़ा भाई जनसंघ के टिकट पर और छोटा भाई कांग्रेस के टिकट पर खड़ा होता है । जब टोपी को यह बात पता चलती है तो वह कहता है । "मैं आज से कम्युनिस्ट हो गया हूँ । इन दोनों के बीच में जो खड़ा हो गया ह उसको सपोर्ट करूंगा ।"॥6 टोपी जब अपने घर आता है तो उसकी माँ रामदुलारी उसमें बड़ा परिवर्तन देखती है । वह राजनीति तो नहीं समझती पर उसको लगता है कि वह मुसलमानों से मिल गया है । उसमें यह परिवर्तन केवल राजनीतिक नहीं था । यह परिवर्तन तो तभी आ गया था जब बचपन में उसे उसके भाइयों से कमतर समझा जाता था । वह अपने भाईयों से नफरत करता है । इसलिए वह अपने सगे भाइयों को छोड़कर कल्लन का चुनाव प्रचार करता है । घर में जब सबको पता चला कि वह कल्लन का चुनाव लड़ाने आया है तो इस पर टोपी की तरफ़ इशारा करते हुए भैरव से कहा । "यह तो मुसलिम यूनिवर्सिटी से आया है । तुम्हारा ही काम करेगा ।"॥7

घर में राजनीतिक वातावरण गर्मी पकडने लगा । एक ही घर में तीन पार्टियाँ बोल रही थीं । जब मुन्नी बाबू ने टोपी को पूछा कि आप भैरव बाबू का चुनाव लड़ाने आए हैं । "जी नहीं" टोपी ने कहा "मैं कल्लन का इलकशन लड़ान आया हूँ ।"॥8 मुन्नी बाबू

और भैरव यह सुनकर बिखर गये । "उस मुसलमान का ?"119 इस पर टोपी ने खरा-सा जवाब दिया । "भैरव बाबू, आपको हिन्दू-मुसलमान से क्या मतलब ? आप तो सेकुलरिज़्म और सोशलिज़्म की बात करते होंगे । टिकट के वास्ते कांग्रेसी हो गए हौ का ?"120

भारतीय राजनीतिक पार्टियों से उसका विश्वास उठता जा रहा था । वह किसी भी पार्टी पर पूर्ण ऊप से भरोसा नहीं कर पा रहा था । "स्टूडेंटस फ़ेडरेशन में जाने के बाद भी उसने कम्युनिस्ट विचारधारा को पूरी तरह मान नहीं लिया था । वह कई प्रश्नों पर कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा से सहमत नहीं था । जब वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर हो गया तब भी कई बातों पर उसका विरोध जस-का-तस रहा ।"121

स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक वातावरण ने हिन्दू-मुस्लिम धार्मिक भेदभाव की भावना उत्पन्न की । अलीगढ़ में उसके साथ हिन्दू होने के कारण भेदभाव किया जाता है । उसे स्कालरशिप नहीं मिलती । नौकरी नहीं मिलती । अंततः टोपी में एक बड़ा परिवर्तन आया कि वह जनसंघी से कम्युनिस्ट बन गया । किन्तु वह इस विचारधारा से भी असंतुष्ट रहा । "कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ने के बाद उस पार्टी से उसका भम तब टूटता है जब यह पार्टी कई गलत निर्णय लेती है । इसके बाद तो भारतीय राजनीतिक पार्टियों से उसका विश्वास उठ जाता है । उसके लिए जैसे कांग्रेस पार्टी वैसे ही जनसंघ पार्टी । इसलिए वह सगे भाइयों को छोड़ कल्लन का चुनाव प्रचार करता है ।"122

टोपी का व्यक्तित्व हर जगह अधूरा दिखाई देता है । उसके जीवन में तन्हाई और अकेलापन ही रहा । समय हमेशा उसके विपरीत ही रहा । परिवार से उपेक्षित होना, अकेलापन, अलीगढ़ युनिवर्सिटी में राजनीतिक वातावरण, हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव आदि परिस्थितियाँ सदैव उसके जीवन को झकझोरती रहीं । अन्त में टोपी इन परिस्थितियों से समझौता नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता ।

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों को स्थापित करते पात्र :-

डॉ० राही मासूम रज़ा की धार्मिक भावना सर्वधर्म समभावयुक्त रही है । वे आजीवन धर्मनिरपेक्ष रहे । राही की दृष्टि में मानवता सबसे बड़ा धर्म है । प्रत्येक धर्म में मानवता की

बात कही गयी है । गीता, कुरान, बाइबल, गुरुग्रन्थ साहब आदि सभी में मानवता की बात है । किसी भी धर्म में दूसरे धर्म को हीन भावना से देखने की बात नहीं कही गई है । राही जी एक संवेदनशील लेखक रहे हैं तथा उनके लगभग सभी उपन्यासों में मानवीयता की भावना दृष्टिगोचर हुई है ।

'कटरा बी आर्ज़ू' के पात्र देशराज में मानवीय मूल्यों के गुण देखे जा सकते हैं । उसमें दया एवं सहायता जैसे गुणों का समावेश होता है । देशराज अनाथ है जिसका पालन-पोषण भोलूनाथ पहलवान ने किया है । देशराज एक मोटर मिकेनिक है । उसके उस्ताद शम्सू मियाँ की आर्थिक स्थिति उससे छिपी नहीं है । शम्सू मियाँ का बेटा अब्दुल हक़ पास्तिान जा चुका है । इसलिए देशराज एक बेटे के समान शम्सू मियाँ के घर, परिवार की चिन्ता करता है । वह जानता है कि शम्सू मियाँ के घर में कई-कई दिन तक खाना नहीं बनता । और वह फ़ाक़ा करते हैं । इसलिए वह जब काम पर जाता तो अपने उस्ताद के लिए भी खाना लेकर जाता । जब वह रोज़े का बहाना करते तो वह समझ जाता कि आज उसके उस्ताद के घर में खाना नहीं बना है । इसलिए वह खाने का टिफ़िन खोलकर खाने की प्रशंसा करने लगता । "यह लीजिए" देश ने कहा आजे रोज़ा रखना था । हम तो आपके वास्ते आलू का भरता, बेसन की रोटी और मिरचे का अचार ....." शम्सू मियाँ के मुँह में पानी आ गया । बोले, "अरे तो कोई वाजिब रोजा थोड़े है !"123

इसके अतिरिक्त वह शम्सू मियाँ की बेटी महनाज़ के ब्याह के लिए दहेज की भी व्यवस्था करता है । वह बिल्लो से छिप-छिप कर महनाज़ के दहेज के लिए हाथ घड़ी की व्यवस्था करता है । वह बिल्लो से झूठ बोलता है कि गाड़ी का पुर्ज़ा टूट गया जिससे वह हाथ घड़ी की व्यवस्था कर सके । "ऐयसा करते हैं ।" देश ने कहा, "घड़ी हम दे देंगे अपनी बहिन को । साइकिल और रेडियो का बन्दोबस्त ज़रूर करना पड़ेगा ।"124 स्वयं मध्यम वर्गीय परिवार का होते हुए भी वह शम्सू मियाँ की सहायता करता है । देशराज में ईमानदारी भी कूट-कूट कर भरी है । वह किसी भी हाल में अपने मज़दूर यूनियन का बुरा नहीं चाहता । इसीलिए जब बाबू गौरीशंकरलाल पांडेय एम पी ने अपने स्वार्थ के लिए शम्सू मियाँ और देशराज को खाने पर बुलाकर मज़दूरों को जेबख़र्च देने की बात की, तो शम्सू मियाँ तो

इस बात से सहमत हुए किन्तु देशराज ने साफ़ इंकार कर दिया । "ऐसा नहीं था कि शम्सू मियाँ समझे न हों कि बाबू साहब कह क्या रहे थे । वह चाहते थे कि शम्सू मियाँ और देश अपने साथियों से गददारी करें । शम्सू मियाँ यह बात फ़ौरन समझ गए थे । देश भी समझ गया था । फ़र्क यह हुआ कि देश ने अपने-अपको बेचने से इन्कार कर दिया और शम्सू मियाँ अपने-आपको बेचने को तैयार हो गए ।"125

उसी प्रकार बिल्लो के चरित्र में भी सेवा भाव, सहायता एवं दया आदि जैसे गुण देखने को मिलते हैं । वह भी मध्यम परिवार से है । किन्तु उसके माँ-बाप नहीं है । उसका पालन-पोषण उसके मामा के घर में हुआ है । बिल्लो लांडरी चलाती है । वह कंज़ूस होते हुए भी मानवीय गुणों से परिपूर्ण है । गरीब लोगों से उसे बहुत हमदर्दी है तथा वह उनकी सहायता भी करती है । इसलिए जब उसे पता चलता है कि शम्सू मियाँ की बेटी महनाज़ की शादी रेडियो, साइकिल एवं घड़ी पर रुकी हुई है तो वह देशराज से छिपकर साइकिल देने की व्यवस्था करती है । जिसके लिए वह देशराज से झूठ बोलती है कि उससे एक साड़ी जल गई । "ओ दिन हमहूँ झूठ बोले रहे । साड़ी-ओड़ी ना जल्ली रही । महनाज के वास्ते साइकिल खरीदना रहा कि तूँ साइकिल क नाम पर चिलपों मचाए लगिहो ।"126 इसके अतिरिक्त वह देश के साथ जाकर रेडियो भी खरीदती है । "बिचारे गरीब आदमी हैं । घड़ी और साइकिल दू चीज कहाँ से खरीदेंगे ? रेडियो और घड़ी हम लोग दे दें ।"127 इस प्रकार वह महनाज़ की शादी के विवाह में शम्सू मियाँ का दहेज का बोझ हल्का करती है ।

महनाज़ के विधवा होने पर जब शम्सू मियाँ उसका ब्याह अपनी ही उम्र के जोखन के साथ करने की बात करते हैं तो वह आग बबूला हो जाती है । क्योंकि वह महनाज़ को वह अपनी बहन मानती थी । वह उसके साथ यह ज़ुल्म होते नहीं देख सकती थी । "शम्सू माम् इन्कार ना किहिन हैं । महनाज़ बाजी उनकी बेटी हैं । कोई जने को बीच में बोले की जरूरत ना है । ऊ चाहें तो महनाज को अन्ध कुएँ मे फेंक दें ।"128 बिल्लो इतनी कंज़ूस है कि एक-एक पैसे को दाँत से पकड़ती है । इसलिए वह कपड़ा स्त्री करने का पैसा अपने माम् भोला पहलवान तक से लेती है । किन्तु उसका दिल बहुत बड़ा है । वह इतवारी

बाबा को जो निम्न वर्ग के हैं तथा भीख माँगते हैं । उन्हें कड़ी ठंडी में मुफ़्त में चाय पिलाती है ।

भोलू पहलवान का पूरा नाम भोलेनाथ सिंह था । किन्तु अपने उस्ताद अबदुल करीम की मृत्य के पश्चात अखाड़े की पगड़ी भोलेनाथ सिंह को मिल गई थी । और उन्होंने इस पगड़ी की लाज भी रखी थी । तब से वह भोलू पहलवान हो गए । भोलू पहलवान अत्यंत सेवा भावी, त्यागी एवं परोपकारी हैं । भोलू पहलवान ने शादी नहीं की थी । वह देशराज और बिल्लो का बिना किसी स्वार्थ के पालन-पोषण करते हैं । भोलू पहलवान देशराज और बिल्लो की अच्छी परवरिश के लिए ब्याह नहीं करते और अपना पूरा जीवन इन दोनों पर न्यौछावर कर देते हैं । देशराज के माँ-बाप दंगों में मारे गए थे । देशराज के पिता भरत से भोलू पहलवान की दाँत काटी दोस्ती थी । इसलिए वह देश को पालने का ज़िम्मा ले लेते हैं । "उन दिनों एक बड़े अच्छे और खाते-पीते घराने में उनकी शादी की बात चल रही थी । पर पहलवान ने सोचा कि जो शादी की तो बच्चा होगा और शायद अपना बच्चा हो जाए तो देश की तरफ़ से उनका ध्यान हट जाए इसलिए उन्होंने शादी न करने का फ़ैसला किया ।"129 वे दोनों को सगे माँ-बाप जैसा प्यार देते हैं ।

भोलू पहलवान हिन्दू-मुस्लिम जैसी संकीर्ण भावनाओं को भी नहीं मानता । वह साम्प्रदायिकता का विरोधी है । वह मात्र मानवता को महत्व देता है । इसीलिए जब मोहल्ले का एक आदमी होली के दिन हिन्दू-मुस्लिम एकता को भंग करने का प्रयत्न करता है । तो पहलवान उस पर कोधित जाते हैं । "खबरदार जो इहाँ हिन्दू-मुसलमान का चक्कर चलाया ।"130 जब शम्सू मियाँ जुम्मे के कारण होली खेलने से इंकार करते हैं तो इस पर वह युवक उन पर ताना मारता है "मियाँ लोग का जुम्मा तो 15 अगस्त सन 1947 को चला गया था पाकिस्तान । होली से परहेज ह तो इहाँ रहे की जरूरत का है ।"131 इस पर भोलू पहलवान शम्सू मियाँ की ओर से करारा जवाब देते हैं । "ए भरभितने ।" पहलवान ने कहा, "शम्सू मियाँ इ महल्ले में चव्वन बरस से रह रहे हैं । ऐतनी तो अभी तोरे बाप राधेश्याम की उमिर ना होगी ।"132

इतवारी बाबा का चरित्र पूर्ण रूप से मानवीय है । वह भिखारी हैं । सप्ताह के छः दिन वह भीख माँगते हैं तथा सातवें दिन इतवार को वह छुटटी रखते हैं । इसलिए वह इतवारी बाबा के नाम से जाने जाते हैं । वह स्वयं भिखारी होते हुए भी लोगों की सहायता करते हैं । वह रामदीन की माँ को पहली शिफ्ट देकर मदद करते हैं । इसी प्रकार वह अल्लाह रक्खे को भी दूसरी शिफ्ट देकर मदद करते हैं । क्योंकि उसे कुछ और काम तो आता नहीं था और कुछ सीखने की उसकी उम्र नहीं थी । वह भीख द्वारा माँगे गये पैसे को बैंक जमा करते हैं । इसलिए इतवारी बाबा एक वसीयत बनाते हैं जिससे उनके मरने के बाद वह पैसे फकीरों में बाँट दिये जायें । "बंक में बारह हजार तीन सौ सत्ताइस रुपया चौबीस पैयसा नकद है । तो हम लिखवा दिया है कि हमरे मरे के बाद हमरा क्रियाकर्म तो चन्दे से किया जाए केह मारे कि अपनी कमाई का कफन पहिने में हम्में सरम आएगी । ऊ जो बारह हजार तीन सौ हैं ओमें से हज़ार रुपया फकीरों के बाँटे वास्ते है ।"133 इस प्रकार इतवारी बाबा का चरित्र उनकी मानवोयता को दर्शाता है ।

'टोपी शुक्ला' उपन्यास का गौण पात्र महेश को सकीना हर साल राखी बाँधती थी । महेश के पिता सय्यद आबिद रज़ा के घनिष्ठ मित्र थे । सकीना और महेश दोनों एक दूसरे को सगे भाई-बहन से ज़्यादा प्यार करते थे । जब हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते ह । तब वह आबिद रज़ा को अपने घर आने के लिए बोलता है । किन्तु वह नहीं मानते हैं । महेश सकीना को अपने घर में शरण देता है । किन्तु उन दंगों में महेश मारा जाता है । "सकीना को पहुँचाकर महेश वापस आ रहा था कि रास्ते में ही मार डाला गया ।"134 एक हिन्दू होते हुए महेश मुसलमान की सहायता करता है । इससे महेश में दया, सहायता आदि गुण परिलक्षित होते हैं जो सर्वोपरि हैं ।

संदर्भिका

1. डॉ० शिव प्रसाद सिंह का कथा साहित्य एवं शिल्प, डॉ० संजय नवले पृ० 243
2. डॉ० शिव प्रसाद सिंह का कथा साहित्य एवं शिल्प, डॉ० संजय नवले पृ० 85

3. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र, डॉ० सुशील जी० धमार्णी पृ० 120
4. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 17
5. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 18
6. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
7. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 19
8. टोपी शुक्ला, डॉ० राहो मासूम रज़ा पृ० 28
9. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
10. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 32
11. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 09
12. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 57
13. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 89
14. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 82
15. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
16. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 84
17. उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, डॉ० आर० एस० हरिकुमार पृ० 184
18. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, डॉ० सशील जी० धर्माणी पृ० 132
19. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 52
20. टोपो शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 54
21. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 57
22. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 58
23. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 54
24. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 84
25. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 34
26. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 35
27. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 27
28. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 37
29. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 32
30. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ० मनीषा ठक्कर पृ० 85
31. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ० मनीषा ठक्कर पृ० 84
32. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 87

33. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 88
34. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 236
35. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 18
36. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 21
37. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 12
38. सीन : 75, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 34
39. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 44
40. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
41. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 49
42. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 80
43. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 82
44. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 91
45. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
46. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 236
47. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
48. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
49. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा 235
50. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ० मनीषा ठक्कर पृ० 229
51. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 301
52. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 302
53. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
54. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 304
55. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 40
56. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 41
57. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 55
58. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 96
59. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 263
60. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 264
61. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 342
62. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 90

63. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 171
64. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 106
65. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 107
66. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
67. आधा गाँव, डा० राही मासूम रज़ा पृ० 117
68. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 28
69. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 25
70. ओस की बूँद, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 93
71. ओस की बूँद, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
72. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 11
73. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
74. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 138
75. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 267
76. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 294
77. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 267
78. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 270
79. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 272
80. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 277
81. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 282
82. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 243
83. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल प० 128
84. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 307
85. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 314
86. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 340
87. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 337
88. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 338
89. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
90. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 30
91. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 23
92. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 31

93. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
94. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 35
95. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 42
96. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 70
97. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 80
98. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 82
99. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 51
100. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 53
101. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृ०
102. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 59
103. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 83
104. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 15
105. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 16
106. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 17
107. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 115
108. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 93
109. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 180
110. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 16
111. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 26
112. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
113. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा प० 61
114. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 62
115. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 69
116. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 71
117. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 78
118. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 79
119. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
120. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० वही पृष्ठ
121. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 80
122. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 46

123. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 42
124. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 43
125. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 79
126. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 157
127. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 52
128. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 69
129. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 28
130. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 77
131. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 78
132. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ
133. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 138
134. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 53

******